

वांगचुक पूरे होश में, हालत स्थिर - सफदरजंग अस्पताल

● लगातार जांच और निगरानी की जा रही है तथा इलाज चल रहा है।

एजेंसी नई दिल्ली। पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक को 20 दिन के अनशन के बाद तबीयत बिगड़ने पर शनिवार को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल ने बताया कि उनकी हालत फिलहाल स्थिर है, लेकिन लंबे समय तक उपवास और शरीर में पानी की कमी के कारण उन्हें लगातार चिकित्सकीय निगरानी और उपचार की आवश्यकता है। शहर और स्थानीय मार्गदर्शिका शनिवार को मीडिया को जारी बयान में सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चार बंबा ने बताया कि ‘सोनम वांगचुक सुबह लगभग 7:40 बजे हमारे अस्पताल पहुंचे। लंबे समय तक उपवास के कारण उन्हें कुछ कमजोरी महसूस हो रही है और शरीर में पानी की कमी है। इसके अलावा उनके सभी महत्वपूर्ण जरूरी स्वास्थ्य पैरामीटरस सामान्य और स्थिर हैं। उनकी लगातार

जांच और निगरानी की जा रही है तथा इलाज चल रहा है। उन्होंने बताया कि वांगचुक पूरी तरह होश में हैं और उनकी



स्थिति स्थिर है। अस्पताल पहुंचने पर सबसे पहले इमरजेंसी मेडिसिन विभाग ने उनका परीक्षण किया, जिसके बाद उन्हें मेडिसिन विभाग में भर्ती कर लिया गया।

शरीर में पानी की कमी के कारण उनके इलेक्ट्रोलाइट्स (जैसे सोडियम, पोटैशियम आदि) का संतुलन प्रभावित हुआ है। डॉक्टर पहले इसे ठीक करेंगे और फिर उनकी स्थिति की दोबारा समीक्षा करेंगे। ‘

सफदरजंग अस्पताल की रिपोर्ट पर सोनम वांगचुक की पत्नी ने उठाए सवाल, अपनी पसंद के मेडिकल सेंटर में शिफ्ट करने की मांग

दिल्ली। दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती प्रसिद्ध पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के स्वास्थ्य और अस्पताल प्रबंधन की पारदर्शिता को लेकर एक नया विवाद खड़ा हो गया है। सोनम वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. आंगमो ने अस्पताल की मेडिकल सुपरिंटेंडेंट को एक पत्र लिखकर उनकी चिकित्सा रिपोर्ट पर गंभीर चिंता जताई है और उन्हें तुरंत डिस्चार्ज कर किसी अन्य मेडिकल सेंटर में शिफ्ट करने की मांग की है। अस्पताल प्रशासन को लिखे पत्र में गीतांजलि ने बताया कि अस्पताल की टीम द्वारा उन्हें सूचित किया गया कि शनिवार सुबह सोनम वांगचुक का पोटैशियम लेवल अचानक गिरकर 2.9 पर आ गया है। परिवार ने इस रिपोर्ट पर गहरा अचंभा व्यक्त किया है।



अभिषेक बनर्जी के कार्यालय के सामने बने शेड पर चला बुलडोजर

● डायमंड हार्बर में प्रशासन ने की कार्रवाई

एजेंसी कोलकाता। दक्षिण 24 परगना जिले के डायमंड हार्बर के आमतलवा स्थित तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी के कार्यालय परिसर के सामने बने एक शेड पर शनिवार सुबह प्रशासन ने कार्रवाई की। भारी पुलिस बल और केंद्रीय सुरक्षा बल की मौजूदगी में बुलडोजर चलाकर नीले रंग के शेड को हटाया गया। कार्रवाई के दौरान पूरे इलाके में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई थी। प्रशासन के अनुसार, कार्यालय से संबंधित पांच मंजिला इमारत के निर्माण को लेकर शिकायत प्राप्त हुई थी कि इसका निर्माण स्वीकृत भवन योजना (बिल्डिंग प्लान) के बिना किया गया है। शिकायत मिलने के बाद संबंधित पक्षों को नोटिस जारी कर निर्धारित

तिथि पर सुनवाई के लिए बुलाया गया था। अधिकारियों का दावा है कि तय समय पर कोई भी पक्ष अपना पक्ष



रखने के लिए उपस्थित नहीं हुआ, जिसके बाद नियमानुसार कार्रवाई की गई। शनिवार सुबह पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बल ने पूरे परिसर को अपने घेरे में ले लिया। मौके पर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी (बीडीओ), भूमि एवं भूमि सुधार विभाग (बीएलआरओ) तथा दमकल विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे।

टीएमसी के खातों में 164 करोड़ रुपये के सांदिग्ध ट्रांजेक्शन

केंद्रीय जांच एजेंसी ने बैंक से मांगा ब्योरा

एजेंसी कोलकाता। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) तृणमूल कांग्रेस के फ्रीज किए गए तीन बैंक खातों में से एक से 164 करोड़ रुपये के फर्जी लेन-देन की जांच कर रहा है। सूत्रों ने बताया कि केंद्रीय एजेंसी ने संबंधित प्राइवेट सेक्टर कमर्शियल बैंक के अधिकारियों को पहले ही एक पत्र भेजकर 164 करोड़ रुपए के ऐसे ट्रांजेक्शन की जानकारी मांगी थी, जिसका खाता वहां है। अभी तृणमूल कांग्रेस के कुल 15 बैंक खातों पर ऐसे निकालने (डेंबिट) से जुड़ी पाबंदियां लगी हुई हैं। इनमें से 3 खातों पर पश्चिम बंगाल पुलिस



निर्देशों के आधार पर ऐसी ही पाबंदियां लगाई गई थीं। जिन 3 बैंक खातों पर राज्य पुलिस और ईडी के निर्देशों के बाद डेंबिट पर रोक लगाई

गई थी, उनमें कुल जमा राशि 440 करोड़ रुपए है। सभी 15 बैंक खातों में कुल जमा राशि लगभग 1,000 करोड़ रुपए है। ईडी के कहने पर जिन तीन बैंक अकाउंट से पैसे निकालने पर रोक लगाई गई थी, उनकी जांच के दौरान सीबीआई के अधिकारियों को एक अकाउंट में 164 करोड़ रुपए के फर्जी ट्रांजेक्शन का पता चला। एजेंसी को अभी इन ट्रांजेक्शन की पूरी जानकारी नहीं मिल पाई है। पश्चिम बंगाल पुलिस के निर्देशों के बाद पिछले महीने तृणमूल कांग्रेस के अलग-अलग बैंक अकाउंट पर पैसे निकालने से जुड़ी कई तरह की रोक लगाने का

सिलसिला शुरू हुआ। यह कदम दो अलग-अलग घटनाओं के बाद उठाया गया। पहली घटना पार्टी के पूर्व कोषाध्यक्ष और पश्चिम बंगाल के पूर्व खेल व बिजली मंत्री अरूप बिस्वास का बैंक अधिकारियों को लिखा गया एक पत्र था। इसमें उन्होंने फंड के गलत इस्तेमाल की आशंका जताते हुए तीनों बैंक अकाउंट को फ्रीज करने की मांग की थी।

इसके बाद, तृणमूल कांग्रेस के बागी गुट के विधायकों ने पश्चिम बंगाल पुलिस से इसी तरह की मांग की। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि इन खातों में भ्रष्टाचार और जबरन वसूली से मिली रकम हो सकती है।

सीजेपी प्रमुख अभिजीत दीपके पर एक महिला ने फेंकी स्याही

एजेंसी नई दिल्ली। दिल्ली के जंतर-मंतर पर 20 दिन से अनशन पर बैठे पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक को अस्पताल में भर्ती कराने के बाद यहां विरोध जता रहे सोशल मीडिया अभियान कॉन्करोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रमुख अभिजीत दीपके पर



शनिवार को एक महिला ने स्याही फेंक दी। इस घटना से विरोध स्थल पर अफरा-तफरी मच गई। इससे पहले अभिजीत दीपके ने आरोप लगाते हुए मीडिया से कहा कि दिल्ली पुलिस ने आज सुबह उनकी अनुपस्थिति में जबरन सोनम वांगचुक को धरनास्थल से उठाया है। अब हम इस शांतिपूर्ण आंदोलन को जारी रखेंगे और आज से अनशन पर बैठेंगे। उन्होंने देश भर की जनता से अपील की है कि इस विरोध प्रदर्शन को शांतिपूर्ण तरीके से ही जारी रखें, कोई भी इस नियम को ना तोड़े। वहीं पुलिस ने अनुरोध किया है कि सभी सीजेपी कार्यकर्ता शांतिपूर्ण ढंग से जंतर-मंतर को खाली कर दें। उल्लेखनीय है कि परीक्षा पत्रों के लीक होने की घटनाओं को लेकर शिक्षा मंत्री धर्मदेव प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर सीजेपी के नेतृत्व में जंतर-मंतर पर धरना-प्रदर्शन जारी है। सीजेपी ने 20 जुलाई को संसद तक मार्च निकालने की घोषणा की है।

अफसर को तनखैया बताने के मामले में सपा नेता आजम खां की अपील खारिज

● दो साल की सजा बरकरार

एजेंसी रामपुर। लोकसभा चुनाव-2019 के दौरान चुनावी सभा में अधिकारी को तनखैया बताने के मामले में सपा नेता आजम खां को राहत नहीं मिली। निचली अदालत से मिली दो वर्ष की सजा के खिलाफ दायर उनकी अपील को एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट (सेशन ट्रायल) ने खारिज कर दिया है। अदालत ने निचली अदालत के फैसले को सही ठहराते हुए सजा और जुर्माने के आदेश को बरकरार रखा है। मामला वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान का है। चुनाव प्रचार के दौरान थाना भोट क्षेत्र के गांव मनकरा में आयोजित एक जनसभा

में आजम खां ने मंच से अधिकारियों को लेकर विवादित टिप्पणी की थी।



प्रशासन ने इसे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना था। इस

बयान के संबंध में तत्कालीन उप जिलाधिकारी घनश्याम त्रिपाठी की ओर से भोट थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। मुकदमे की सुनवाई एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट (मजिस्ट्रेट ट्रायल) में हुई।

सुनवाई के बाद अदालत ने

16 मई 2026 को आजम खां को दोषी करार देते हुए विभिन्न धाराओं में दो-दो वर्ष के कारावास और प्रत्येक धारा में पांच-पांच हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई थी। निचली अदालत के फैसले को चुनौती देते हुए आजम खां ने एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट (सेशन ट्रायल) में अपील दाखिल की थी।

विक्रम-1 मिशन भारत के तेजी से बढ़ते स्पेस इकोसिस्टम की ताकत को दर्शाता है: इसरो चेयरमैन

एजेंसी नई दिल्ली। इसरो के चेयरमैन डॉ. वी. नारायणन ने शनिवार को कहा कि स्काईरूट एयरोस्पेस के विक्रम-1 की पहली सफल ऑर्बिटल लॉन्चिंग भारत के तेजी से विकसित हो रहे स्पेस इकोसिस्टम की बड़ी उपलब्धि है और यह देश के निजी स्पेस सेक्टर की तेज प्रगति को दर्शाती है। सफल ऑर्बिटल मिशन के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए डॉ. नारायणन ने कहा कि कंपनी की स्थापना के केवल 8 वर्षों के भीतर ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल विकसित करना और पहले ही प्रयास में मिशन को सफल बनाना एक असाधारण उपलब्धि है। उन्होंने कहा, ‘स्काईरूट एयरोस्पेस की शुरुआत केवल 8 साल पहले हुई थी। इतने कम समय में ऑर्बिटल लॉन्च व्हीकल विकसित करना और पहले ही प्रयास में मिशन को सफल बनाना वास्तव में बहुत बड़ी उपलब्धि है। ‘ इसरो चेयरमैन ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का स्पेस इकोसिस्टम तेजी से

विकसित हुआ है। राष्ट्रीय स्पेस प्रोग्राम के साथ-साथ अब निजी कंपनियां भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने कहा, ‘यह पूरे देश, खासकर अंतरिक्ष समुदाय के लिए अत्यंत संतोष और गर्व का क्षण है। हमें इस शानदार उपलब्धि पर गर्व है। आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत का स्पेस इकोसिस्टम



लगातार मजबूत हो रहा है। ‘ इस अवसर पर इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइजेशन सेंटर (आईएन-स्पेस) के चेयरमैन पवन गोयनका ने भी सफल लॉन्चिंग को किसी दूसरे देश की उपलब्धि से तुलना करने के बजाय ‘भारत का अपना ऐतिहासिक पल’ बताया।

उत्तर प्रदेश में बड़ा दांव खेलेंगे चिराग पासवान

● किया सभी 403 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान

एजेंसी नोएडा। उत्तर प्रदेश में साल 2027 में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने अपनी कमर कस ली है। ग्रेटर नोएडा के नॉलेज पार्क स्थित इंडिया एक्सपोजे एंड सेंटर मार्ट में आयोजित ‘मिराकी’ कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय मंत्री और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने यह बड़ा चुनावी एलान किया। पार्टी 403 सीटों पर लड़ने के लिए तैयार

उन्होंने स्पष्ट किया कि पार्टी उत्तर प्रदेश की सभी 403 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए पूरी तरह से तैयार है और इसके

लिए राज्य इकाई जल्द ही केंद्रीय संसदीय बोर्ड को एक औपचारिक प्रस्ताव भेजेगी।

गठबंधन पर संशय, पर विस्तार की पूरी योजना गठबंधन के सवाल पर केंद्रीय



मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि पार्टी गठबंधन में चुनाव लड़ेगी या नहीं, अथवा गठबंधन का क्या स्वरूप होगा, इसका फैसला आने वाले महीनों में किया जाएगा। उन्होंने साफ

किया कि फिलहाल गठबंधन को लेकर कोई अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। चिराग पासवान ने भरोसा जताया कि बिहार की तरह लोजपा (रामविलास) उत्तर प्रदेश में भी शानदार प्रदर्शन करेगी।

गठबंधन के सवाल पर केंद्रीय

हमारे पास झारखंड, नागालैंड में विधायक

पासवान ने पार्टी की राष्ट्रीय उपस्थिति का इवाला देते हुए कहा कि झारखंड से लेकर नागालैंड तक पार्टी के विधायक हैं, जबकि अरुणाचल प्रदेश और दमन-दीव में भी कार्यकर्ताओं का मजबूत नेटवर्क है। लोजपा (रामविलास) अब इसी तर्ज पर पूरे देश में अपने संगठन का विस्तार करने की रणनीति पर काम कर रही है।

छत्तीसगढ़ में बारिश का 93 साल का रिकॉर्ड टूटा

- यूपी के सभी 75 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट
- अरुणाचल प्रदेश के 35 गांवों में लैंडस्लाइड

एजेंसी अहमदाबाद। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में बारिश का 93 साल पुराना रिकॉर्ड टूट गया। यहां 1993 में 14.93 इंच बारिश हुई थी। लेकिन शनिवार को 16 इंच बारिश हुई और ये रिकॉर्ड टूट गया। यूपी के लखनऊ, कानपुर और बाराबंकी समेत सभी 75 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया गया। वाराणसी में गंगा नदी के जलस्तर में तेजी से बढ़ोतरी होने के बाद गंगा आरती की जगह बदलनी पड़ी है। झंसी में 15 मिमट की बारिश के बाद पारा 7 डिग्री तक कम हो गया। वहीं, अरुणाचल प्रदेश में लगातार हो रही बारिश के कारण बाढ़ और भूस्खलन की स्थिति अब भी



गंभीर बनी हुई है। पिछले 24 घंटों में अपर सुबनसिरी जिले के गिबा, निलिंग, चेतम और दापोरिजो सर्किलों के 35 गांवों में पलैश फ्लड और लैंडस्लाइड हुई। बाढ़ से अब तक

केदारनाथ मार्ग पर बढ़ा भूस्खलन का खतरा?

रुद्रप्रयाग। उत्तराखंड में मानसून के सक्रिय होने के साथ ही केदारनाथ धाम समेत पूरी केदार घाटी और रुद्रप्रयाग जिले के कई इलाकों में लगातार बारिश हो रही है। लगातार वर्षा के कारण केदारनाथ हाईवे और पैदल यात्रा मार्ग पर भूस्खलन तथा पत्थर गिरने की घटनाएं बढ़ गई हैं। संभावित आपदा से निपटने के लिए जिला प्रशासन, पुलिस और आपदा प्रबंधन की टीमों संवेदनशील स्थानों पर तैनात कर दी गई हैं। वहीं जिला आपदा नियंत्रण कक्ष चौबीसों घंटे हालात पर नजर बनाए हुए है।

उत्तराखंड की सूनी होती धरती और बढ़ता पलायन



पवन माकन
ग्रुप एडिटर, महानगर मेट्रो

सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि केवल पांच वर्षों के भीतर राज्य में लगभग 63 हजार हेक्टेयर कृषि भूमि बंजर हो गई है। अल्मोड़ा और पौड़ी जैसे जिलों में सबसे अधिक खेत खेती से बाहर हो चुके हैं। जिन सीढ़ीदार खेतों में कमी हरियाली लहलहाती थी, वे अब घास और झाड़ियों से भर गए हैं। गांवों के आसपास फैले खेत चारागाह में बदलते जा रहे हैं। यह दृश्य केवल कृषि संकट का नहीं बल्कि पहाड़ की बदलती सामाजिक तस्वीर का भी संकेत है।

जब खेत बंजर हों रोजगार सीमित हो और गांवों से टूटने लगे जीवन का रिश्ता... उत्तराखंड को प्रकृति ने अपार सौंदर्य, घने जंगल, स्वच्छ जलस्रोत और उपजाऊ सीढ़ीदार खेतों का वरदान दिया है। कभी यही खेत पहाड़ की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते थे। मंडुवा, झंगोरा, गहत, चावल, मक्का और अन्य पारंपरिक फसलें न केवल लोगों की आजीविका का आधार थीं, बल्कि पहाड़ी संस्कृति और जीवनशैली की पहचान भी थीं। आज वही खेत तेजी से बंजर होते जा रहे हैं। गांव खाली हो रहे हैं, खेती से लोगों का भरोसा उठ रहा है और रोजगार की तलाश में युवा पहाड़ छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। यह केवल कृषि संकट नहीं है, बल्कि उत्तराखंड के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भविष्य से जुड़ा गंभीर प्रश्न बन चुका है।

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों की सबसे बड़ी चुनौती आजीविका के सीमित साधन हैं। राज्य का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा पर्वतीय है और आधे से अधिक लोग इन्हीं इलाकों में रहते हैं। यहां उद्योगों का विकास सीमित है और सरकारी नौकरियां भी पर्याप्त नहीं हैं। ऐसे में खेती और पशुपालन ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार रहे हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इन क्षेत्रों का योगदान लगातार घटा है। एक समय राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन का योगदान लगभग 14 प्रतिशत था, जो अब घटकर लगभग 9 प्रतिशत के आसपास रह गया है। यह गिरावट बताती है कि खेती अब लोगों के लिए लाभ का नहीं बल्कि संघर्ष का माध्यम बनती जा रही है।

सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि केवल पांच वर्षों के भीतर राज्य में लगभग 63 हजार हेक्टेयर कृषि भूमि बंजर हो गई है। अल्मोड़ा और पौड़ी जैसे जिलों में सबसे अधिक खेत खेती से बाहर हो चुके हैं। जिन सीढ़ीदार खेतों में कभी हरियाली लहलहाती थी, वे अब घास और झाड़ियों से भर गए हैं। गांवों के आसपास फैले खेत चारागाह में बदलते जा रहे हैं। यह दृश्य केवल कृषि संकट का नहीं बल्कि पहाड़ की बदलती सामाजिक तस्वीर का भी संकेत है।

खेती से लोगों का मोहभंग कई कारणों से हुआ है। सबसे पहला कारण लगातार बढ़ता पलायन है। जब गांव के युवा रोजगार के लिए शहरों की ओर चले जाते हैं तो खेतों में काम करने वाले हाथ कम पड़ जाते हैं। बुजुर्ग और महिलाएं अकेले पूरी खेती नहीं संभाल पातीं। धीरे-धीरे खेत खाली छोड़ दिए जाते हैं और फिर वे बंजर हो जाते हैं। यही कारण है कि उत्तराखंड के अनेक गांव आज जनसंख्या



घटने और खेती समाप्त होने की दोहरी मार झेल रहे हैं। दूसरा बड़ा कारण जंगली जानवरों का बढ़ता आतंक है। जंगलों से निकलकर बंदर, लंगूर, जंगली सुअर, नीलगाय और अन्य वन्यजीव खेतों में घुसकर पूरी फसल नष्ट कर देते हैं। किसान पूरे वर्ष मेहनत करता है लेकिन कटाई से पहले ही फसल बर्बाद हो जाती है। ऐसे में किसान का मनोबल टूटना स्वाभाविक है। कई गांवों में स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि लोग खेती करने का जोखिम ही नहीं उठाना चाहते। खेती में लागत बढ़ती जा रही है लेकिन उत्पादन की कोई गारंटी नहीं बची है।

तीसरी समस्या सिंचाई की कमी है। उत्तराखंड के अधिकांश पर्वतीय क्षेत्रों में खेती आज भी वर्षा पर निर्भर है। यदि मानसून समय पर नहीं आए या बारिश कम हो जाए तो पूरी बुआई प्रभावित हो जाती है। आधुनिक सिंचाई सुविधाओं का अभाव किसानों की परेशानी और बढ़ा देता है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की अनिश्चितता ने भी खेती को पहले से अधिक जोखिम भरा बना दिया है।

चौथा कारण खेती से मिलने वाला सीमित लाभ है। पहाड़ों में छोटे-छोटे खेत, कठिन भौगोलिक परिस्थितियां और परिवहन की ऊंची लागत किसानों की आय को सीमित कर

देती है। यदि फसल अच्छी भी हो जाए तो उसे बाजार तक पहुंचाना महंगा पड़ता है। किसान को उचित मूल्य नहीं मिलता और उसकी मेहनत का लाभ बिचौलियों तक सीमित रह जाता है। यही वजह है कि अनेक परिवार अब केवल अपने घरेलू उपयोग के लिए खेती कर रहे हैं, जबकि नकदी आय के लिए परिवार का कोई सदस्य शहरों में मजदूरी या नौकरी करने को मजबूर है।

महिलाओं पर इस संकट का सबसे अधिक प्रभाव दिखाई देता है। पहाड़ों में पुरुषों के पलायन के बाद खेती, पशुपालन, घर और परिवार की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर आ जाती है। बढ़ती उम्र, सीमित संसाधन और जंगली जानवरों के खतरों के बीच खेती करना उनके लिए लगातार कठिन होता जा रहा है। अनेक महिलाएं मानती हैं कि अब खेती केवल परंपरा निभाने तक सीमित रह गई है, क्योंकि इससे परिवार का खर्च चलाना संभव नहीं रह गया है।

खेती में गिरावट का असर केवल किसानों तक सीमित नहीं है। इसका प्रभाव पूरे ग्रामीण समाज पर पड़ रहा है। गांवों में स्कूल बंद होने की स्थिति बन रही है, स्थानीय बाजारों की गतिविधियां कम हो रही हैं और पारंपरिक संस्कृति भी कमजोर पड़ रही है। जब गांव खाली होते हैं तो वहां की

सामाजिक संरचना भी टूटने लगती है। त्योहार, मेलों और सामुदायिक जीवन की रीनक धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। पलायन केवल लोगों का स्थान परिवर्तन नहीं बल्कि पूरे सामाजिक ताने-बाने में बदलाव लेकर आता है। फसलों के आंकड़े भी इस संकट की गंभीरता को स्पष्ट करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में चावल, मंडुवा, सावा और मक्का जैसी प्रमुख फसलों के रकब में उल्लेखनीय कमी आई है। विशेष रूप से मंडुवा और सावा जैसी पारंपरिक मोटे अनाज की खेती में लगभग एक चौथाई से अधिक गिरावट दर्ज की गई है। जबकि आज पूरी दुनिया मोटे अनाज को पोषण और जलवायु अनुकूल खेती के रूप में बढ़ावा दे रही है, उत्तराखंड में इनकी खेती सिमटती जा रही है। यह स्थिति चिंता का विषय है।

यदि इस समस्या का समय रहते समाधान नहीं किया गया तो आने वाले वर्षों में उत्तराखंड के अनेक गांव पूरी तरह खाली हो सकते हैं। इसलिए केवल खेती को बचाने की नहीं बल्कि पूरे पहाड़ी जीवन को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। सरकार को सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना होगा, जंगली जानवरों से फसलों की रक्षा के प्रभावी उपाय करने होंगे, पर्वतीय कृषि के लिए विशेष सहायता और न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी व्यवस्थाओं को मजबूत करना होगा। स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग, प्रसंस्करण और बेहतर विपणन व्यवस्था विकसित करने से किसानों की आय बढ़ाई जा सकती है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग, पर्यटन, बागवानी, मधुमक्खी पालन, औषधीय पौधों की खेती और स्वरोजगार के नए अवसर विकसित करने होंगे ताकि युवाओं को गांव छोड़ने की मजबूरी न रहे।

उत्तराखंड की पहचान केवल उसके पहाड़ों और पर्यटन से नहीं बल्कि उसके जीवंत गांवों और हरे-भरे खेतों से भी है। यदि खेत सूने हो जाएंगे और गांव खाली हो जाएंगे तो पहाड़ की आत्मा भी कमजोर पड़ जाएगी। आज आवश्यकता केवल आंकड़ों पर चिंता व्यक्त करने की नहीं बल्कि ऐसी नीतियां बनाने की है जो खेती को लाभकारी बनाएं, ग्रामीण जीवन को सम्मानजनक बनाएं और युवाओं को अपने गांव में ही भविष्य दिखाई दे। तभी उत्तराखंड के बंजर होते खेत फिर से हरियाली से भर सकेंगे और पलायन की जगह विकास की नई कहानी लिखी जा सकेगी।

(वरिष्ठ प्रकाश साहित्यकार-स्तम्भकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

हाइड्रोजन ट्रेन

देश की पहली हाइड्रोजन ऊर्जा से चलने वाली रेल की शुरुआत ने भारत में साफ-सुथरे और कम प्रदूषण वाले ट्रांसपोर्ट की ओर बदलाव की प्रक्रिया आरंभ कर दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुक्रवार को हरियाणा में हरी झंडी दिखाकर शुरू किया गया यह प्रोजेक्ट- ह्यूमेक इन इंडियाहू के सफलता के प्रतीक के तौर पर भी प्रस्तुत किया गया। दूसरे शब्दों में कहें तो यह पूरी दुनिया को संदेश देने का प्रयास ही है कि आज भारत पर्यावरण के अनुकूल परिवहन को प्राथमिकता देने के लिये प्रतिबद्ध है। यानी हम भी इस क्षेत्र के ग्लोबल लीडर्स में शामिल होने के आकांक्षी हैं। निश्चित रूप से हाइड्रोजन फ्यूल से चलने वाली यह 10-कोच वाली ट्रेन, जिसमें सिर्फ पानी की भाप ही निकलती है, डीजल इंजनों का पर्यावरण अनुकूल विकल्प भी है। उल्लेखनीय है कि हरियाणा के जींद में स्वदेशी टेक्नोलॉजी और स्थानीय स्तर पर विकसित हाइड्रोजन इकोसिस्टम के साथ, यह प्रोजेक्ट एडवांस्ड इंजीनियरिंग में देश की बढ़ती क्षमताओं को भी दर्शाता है। वहीं दूसरी ओर यह प्रोजेक्ट देश के ह्यूनेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशनहू के भी संबल देने वाला है। जिसका उद्देश्य आयातित जीवाश्म ईंधन पर भारत की निर्भरता को कम करना तो है ही, साथ ही दीर्घकाल में देश के नेट-जीरो के लक्ष्यों को पूरा करने में सहयोग बढ़ाना भी है। सही मायने में देश में ग्रीन हाइड्रोजन का इंणनीतिक महत्व जलवायु संबंधी चिंताओं से कहीं आगे बढ़कर है। हाल के दिनों में पश्चिम एशिया में लगातार बढ़ते अमेरिका व ईरान के संघर्ष से उपजे विषम हालातों ने ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की जरूरत को एकबार फिर से रेखांकित किया है। ऐसे में आयातित कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस और औद्योगिक फीडस्टॉक पर भारत की भारी निर्भरता के कारण ऊर्जा सुरक्षा आज देश की राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गई है। विशेष रूप से वैश्विक भू-राजनीतिक अस्थिरता के दौर में। आज के वैश्विक अशांति के समय में ऊर्जा सुरक्षा राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा के लिए अपरिहार्य शर्त बन गई है।

वितन-मनन

सुख की उपेक्षा क्यों?

मेरे पास लोग आते हैं। जब वे अपने दुख की कथा रोने लगते हैं, तो बड़े प्रश्नन मालूम होते हैं। उनकी आंखों में चमक मालूम होती है। जैसे कोई बड़ा गीत गा रहे हों! अपने घाव खोलते हैं, लेकिन लगता है जैसे कमल के फूल ले आए हैं। सुख की तो कोई बात ही नहीं करता। और ऐसा नहीं है कि सुख नहीं है; हम सुख पर पर ध्यान नहीं देते हैं। हम दुःख-दुख चुन लेते हैं; हम सुख की उपेक्षा कर देते हैं। फिर जिसकी उपेक्षा कर देते हैं, स्वभावतः धीरे-धीरे वह दूर चला जाता है और जिसमें हम रस लेते हैं वह पास होता चला जाता है।

संतों की बात तुम्हें तभी जमेगी, रुचेगी, भली लगेगी, प्रीतिकर मालूम होगी-जब तुम दुख को पकड़ना छोड़ दोगे; जब तुम जागोगे और सुख की सचेष्ट खोज शुरू करोगे। तुम्हारे भीतर अजर अभी भी दुख को पकड़ने का आयोजन चल रहा है, तो संतों के वचन तुम्हारे कानों में गुंजेगे और खो जाएंगे। तुम्हारे हृदय तक नहीं पहुंचेंगे। क्योंकि संतों के वचनों में बड़ा सुख भरा है। तुम सुखोन्मुख हो जाओ, तुम आनंद की खोज में लग जाओ; तो ये एक-एक शब्द ऐसे जाएंगे तुम्हारे भीतर जैसे तीर चले जाएं। और ये एक-एक शब्द तुम्हारे भीतर ऐसे-ऐसे हजार-हजार फूल खिला देंगे, जैसे कभी न खिले थे। तुम्हारे भीतर बड़ी रोशनी होगी।

ये छोटे-छोटे शब्द हैं। मगर ये बड़े सार्थक शब्द हैं। सुनो- ह्वाबोलू हरिनाम तु छोड़ि दे काम सब, सहज में भूतिक तेरी काम यानी कामना। काम यानी वासना। काम यानी इच्छा, तृष्णा। यह मिले वह मिले-कुछ मिले! जब तक हम मिलने की दौड़ में होते हैं, हम भिखमगे होते हैं। और जब तक हम भिखमगे होते हैं, तब तक परमात्मा नहीं मिलता। परमात्मा भिखमगों की मिलता ही नहीं। परमात्मा सम्राटों की मिलता है। परमात्मा उनको मिलता है जो अपने मालिक है। परमात्मा उनको मिलता है जो कुछ मांगते ही नहीं।

असल में वे ही परमात्मा को मांगने में कुछ सफल हो पाते हैं, जो और कुछ नहीं मांगते। जिन्होंने कुछ और मांगा, वे परमात्मा की कैसे मांगेंगे। वह जवान फिर परमात्मा को मांगने के योग्य न रह गई। वह जवान अपवित्र हो गई। जिस जवान से बेटा मांगा, बेटी मांगी, धन मांगा, पद मांगा, प्रतिष्ठा मांगी-उसी जवान से परमात्मा को मांगेंगे? इस जहर भरे पात्र में अमृत रखेंगे? यह जवान जब तक मांगती है तब तक संत है। जिस दिन यह जवान मांगती नहीं, उस दिन परमात्मा की यात्रा शुरू हुई। उस दिन बिन मांगे मिलता है। ऐसे तो मांगे-मांगे भी नहीं मिलता।

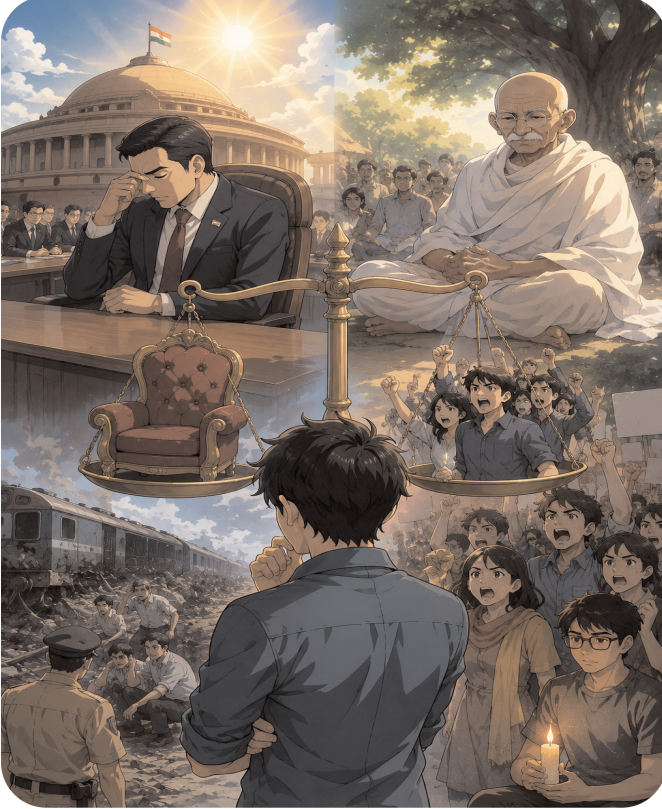
पावर के साथ ज़िम्मेदारी कहाँ चली गई? इस्तीफ़ा कोई ड्रामा नहीं, नैतिकता का आईना है

महानगर मेट्रो ब्यूरो

जब भी डेमोक्रेसी में कोई बड़ी नाकामी, करप्शन या गलत काम सामने आता है, तो एक बंद तर्क दिया जाता है: 'क्या इस्तीफ़ा देने से कोई सुधार होगा?' यह सवाल बुनियादी तौर पर गलत है और इसमें कमियां ढूंढी जाती हैं। असली सवाल यह होना चाहिए, 'बिना अकाउंटेबिलिटी के सुधार कैसे मुमकिन है? आज जब भी नैतिकता की बात आती है, तो हमेशा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्रीजी का उदाहरण दिया जाता है। लेकिन क्या हमने उस उदाहरण का सही मतलब समझा है? जब शास्त्रीजी ने रेल हादसे के बाद इस्तीफ़ा दिया, तो वे खुद जाकर ट्रेन से नहीं टकराए। उन्होंने एक मिनिस्टर के तौर पर, एडमिनिस्ट्रेशन के हेड के तौर पर 'नैतिक ज़िम्मेदारी' मानी। यही उनकी महानता और डेमोक्रेसी के मूल्यों के प्रति वफ़ादारी थी। इस्तीफ़े का मतलब यह नहीं है कि हादसे पूरी तरह रुक जाएंगे, बल्कि इसका मतलब यह है कि पूरे सिस्टम में एक कड़ा मैसेज जाए कि अगर कोई बड़ी लापरवाही हुई, तो टॉप पर बैठे व्यक्ति को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। कॉर्पोरेट सेक्टर में भी अगर मैनेजर लेवल पर कोई बड़ी गलती हो जाए तो इस्तीफ़ा ले लिया जाता है, तो फिर पब्लिक रिप्रेजेंटेटिव के लिए अलग नियम क्यों हैं? जब हृदयश्चक्र जैसी नेशनल लेवल की

परीक्षाओं में लाखों स्टूडेंट्स के भविष्य के साथ छेड़छाड़ के गंभीर आरोप लगते हैं, तो निष्पक्ष जांच और जवाबदेही की मांग ही असली डेमोक्रेटिक प्रोसेस है। एक-दो स्टूडेंट्स की सफलता इस बात का सबूत नहीं हो सकती कि पूरा सिस्टम पवित्र और साफ है। सत्ता में बैठे लोगों का पॉलिटिक्स करना तो ठीक है, लेकिन जब आम लोग या सोशल एक्टिविस्ट आवाज उठाते हैं तो उसे 'पॉलिटिक्स' कहना कहीं का इस्माफ़ है? सोनम वांगचुक जैसे सोशल एक्टिविस्ट की बातों से कोई सहमत नहीं हो सकता, लेकिन शांति से सवाल पूछने, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने या अनशन करने का उनका संवैधानिक अधिकार कोई नहीं छीन सकता। डेमोक्रेसी के इस अहिंसक विरोध को 'इमोशनल ब्लैकमेलिंग' या 'ड्रामा' कहना संविधान और देश के इतिहास का अपमान है। अगर अनशन सिर्फ ब्लैकमेलिंग होता, तो गांधीजी के अहिंसक आंदोलनों और सत्याग्रहों की वैल्यू खत्म हो जाती! उपवास का मकसद किसी को हराना या डराना नहीं है, बल्कि सत्ता के नशे में चूर हुक्मरानों की अंतरात्मा को जगाना है। जब देश के आम नागरिक के पास न तो ताकत हो, न ही बहुत सारा पैसा या मीडिया पर उसका असर हो, तो उसके पास अपनी बात सरकार तक पहुंचाने के लिए अहिंसक आंदोलन और उपवास के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं

बचता। अगर सरकार समय पर बातचीत करे और सवालों के वाजिब जवाब दे, तो किसी को सड़कों पर उतरने या भूखे रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लेकिन बदकिस्मती से, एक ऐसा वर्ग जो अधिकारियों से सीधे सवाल पूछने की आदत छोड़ चुका है, वह भी ऐसे नैतिक विरोध का सहारा लेता है। क्या यह बिल्कुल सच है कि किसी देश में एक मजबूत विपक्ष जरूरी है, लेकिन अगर विपक्ष कमजोर हो, तो क्या नागरिकों को अपने अधिकार और विरोध करने का अधिकार छोड़ देना चाहिए? डेमोक्रेसी सिर्फ संसद में विपक्ष के बैठने से नहीं चलती; उसके लिए एक जागरूक मीडिया, एक आजाद न्यायपालिका और सड़कों पर उतरकर अपनी आवाज उठाने वाला एक जन आंदोलन भी उतना ही जरूरी है। किसी भी विचारधारा की लड़ाई में, जुबानी हमले करने या निजी आलोचना करके नैतिकता दिखाने के बजाय, उठाए गए मुद्दों पर लॉजिकल चर्चा होनी चाहिए। पावर हमेशा ज़िम्मेदारी के साथ आती है। अगर बड़ी नाकामियों के बाद भी किसी की ज़िम्मेदारी तय नहीं की गई, तो डेमोक्रेसी में आम आदमी की राय और ज़िम्मेदारी की वैल्यू खत्म हो जाएगी। असहमति को खारिज करने के बजाय सवालों के सही जवाब देना ही डेमोक्रेसी की सच्ची परंपरा है!



यक्ष प्रश्न: क्या विकसित भारत 2047 का लक्ष्य 2075 में हासिल होगा?



यदि आप विकसित भारत 2047 का स्वप्न देख रहे हैं तो थोड़ा संभल जाइए, क्योंकि कुछ अर्थशास्त्रियों ने यह तर्क दिया है कि यदि भारत की मौजूदा आर्थिक वृद्धि दर, उत्पादकता और रोजगार सृजन की गति में पर्याप्त सुधार नहीं हुआ, तो भारत को 'विकसित देश' बनने में 2047 के बजाय 2075 तक का समय लग सकता है। बता दें कि यह कोई आधिकारिक सरकारी अनुमान नहीं है, बल्कि कतिपय अर्थशास्त्रियों द्वारा किए गए एक आर्थिक विश्लेषण पर आधारित दृष्टिकोण मात्र है, जो सत्य के निकट है या परे, यह भविष्य के गर्भ में है। हाँ, इतना जरूर है कि इससे विपक्ष को सतापक्ष की खिल्ली उड़ाने का एक मौका जरूर मिल गया है। दरअसल, इस संदर्भ में चर्चित अर्थशास्त्री सुरजीत भल्ला ने भी कहा कि यदि वर्तमान गति ऐसी ही बनी रही, तो विकसित भारत का लक्ष्य 2047 तक हासिल करना कठिन हो सकता है। मसलन, Surjit Bhalla का आशय यह है कि केवल उच्च आर्थिक वृद्धि दर पर्याप्त नहीं है। यदि वर्तमान गति, निवेश, उत्पादकता और रोजगार सृजन की चुनौतियाँ बनी रहें, तो भारत को विकसित देश बनने में 2047 के बजाय 2075 तक का समय लग सकता है।

इस प्रकार से देखा जाए तो उन्होंने और उनके जैसे अन्य कई अर्थशास्त्रियों द्वारा उठाई जाने वाली प्रमुख चिंताएँ इस प्रकार हैं:- पहली, विकास दर में कमी: विकसित भारत के लक्ष्य के लिए लंबे समय तक 8-

9% या उससे अधिक वास्तविक GDP वृद्धि की आवश्यकता मानी जाती है, जबकि हाल के वर्षों में वृद्धि इससे कम रहने का अनुमान है। दूसरी, प्रति व्यक्ति आय: विकसित देश बनने का आधार केवल कुल GDP नहीं, बल्कि प्रति व्यक्ति आय भी है। यदि जनसंख्या के अनुपात में आय पर्याप्त तेजी से नहीं बढ़ती, तो लक्ष्य पीछे खिसक सकता है। तीसरी, रोजगार की चुनौती: आर्थिक वृद्धि के अनुरूप पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार नहीं बनने से आय और उपभोग दोनों प्रभावित होते हैं। चौथी, विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग): GDP और रोजगार में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी अपेक्षित स्तर तक नहीं बढ़ पाई है। पांचवीं, मानव पूंजी: शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास और श्रम उत्पादकता में अभी भी उल्लेखनीय सुधार की आवश्यकता है। छठी, वैश्विक अनिश्चितताएँ: भू-राजनीतिक तनाव, व्यापार बाधाएँ, ऊर्जा कीमतें और वैश्विक आर्थिक मंदी जैसे कारक भी विकास की गति को प्रभावित कर सकते हैं। हालाँकि, यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि यह

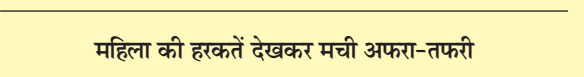
एक आर्थिक आकलन है, कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं। यदि भारत अगले दो दशकों में तेज और निरंतर आर्थिक वृद्धि, व्यापक रोजगार सृजन, विनिर्माण विस्तार, बुनियादी ढाँचे में निवेश, शिक्षा-स्वास्थ्य सुधार और प्रशासनिक सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू करता है, तो 2047 का लक्ष्य अधिक यथार्थवादी हो सकता है। इसलिए सुरजीत भल्ला का तर्क मूलतः यह है कि यदि वर्तमान गति और संरचनात्मक चुनौतियाँ नहीं बदलीं, तो विकसित भारत का लक्ष्य 2047 से काफी आगे खिसक सकता है। इसके पीछे प्रमुख कारण बताए जाते हैं जो इस प्रश्न का हैं: पहला, विकास दर की चुनौती: विकसित देशों की श्रेणी में पहुँचने के लिए भारत को लंबे समय तक लगभग 7-8% या उससे अधिक वास्तविक जीडीपी (GDP) वृद्धि बनाए रखनी होगी। यदि वृद्धि 6% के आसपास रहती है, तो लक्ष्य पीछे खिसक सकता है। दूसरा, प्रति व्यक्ति आय कम होना: भारत की कुल अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, लेकिन बड़ी

आबादी के कारण प्रति व्यक्ति आय अभी विकसित देशों से काफी कम है। तीसरा, रोजगार और उत्पादकता: उच्च आर्थिक वृद्धि के साथ गुणवत्तापूर्ण रोजगार और श्रम उत्पादकता में तेज सुधार आवश्यक है। चौथा, विनिर्माण क्षेत्र की धीमी प्रगति: यदि मैन्युफैक्चरिंग और निर्यात अपेक्षित गति से नहीं बढ़ते, तो आय वृद्धि सीमित रह सकती है। पांचवां, शिक्षा और स्वास्थ्य: मानव पूंजी में निवेश पर्याप्त न होने पर दीर्घकालिक विकास प्रभावित होता है। छठा, बुनियादी ढाँचा और संस्थागत सुधार: न्यायिक दक्षता, भूमि, श्रम और प्रशासनिक सुधारों की गति भी निर्णायक मानी जाती है। वहीं, दूसरी ओर, 2047 के लक्ष्य के समर्थन में भी मजबूत तर्क हैं क्योंकि भारत में सत्ता प्रतिष्ठान के रिकॉर्ड्स दर् रिकॉर्डों को तोड़ती जा रही भाजपा नीत राजग की नरेंद्र मोदी सरकार के लिए विकसित भारत 2047 एक ड्रीम प्रोजेक्ट है। चूंकि भारत की आजादी प्राप्ति का सौवाँ वर्ष है, इसलिए सरकार इसे ज्यादा तवज्जो दे रही है, जबकि वैश्विक षड्यंत्रकारी देश अमेरिका/चीन और उनके पिछलग्गू कट्टर मुस्लिम देश भारत की तरक्की से जल-धुन रहे हैं! नामचीन अर्थशास्त्रियों का मानना है कि यदि भारत की अर्थव्यवस्था लगातार ऊँची आर्थिक वृद्धि बनाए रखे, डिजिटल अर्थव्यवस्था, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा और विनिर्माण में तेजी से आगे बढ़े, कौशल विकास और रोजगार सृजन पर जोर दे, तथा राश्यों में सुधारों की गति तेज हो, तो विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य अपेक्षाकृत जल्दी यानी कि 2047 तक या उससे कुछ साल पहले भी हासिल किया जा सकता है। इसलिए 2047 और 2075 को निश्चित भविष्यवाणी नहीं, बल्कि अलग-अलग आर्थिक परिदृश्यों (श्रैल्लेख़्द्वर) के रूप में देखना चाहिए। अंतिम परिणाम इस बात पर निर्भर करेगा कि आने वाले दो दशकों में भारत सुधारों, निवेश, उत्पादकता, मानव संसाधन विकास की गति और सुशासन व पारदर्शिता कितनी बढ़ा पाता है।

एमपी & यूपी

गोरखपुर की तहसील में डंडा लेकर कानूनगो को दूढ़ने पहुंच गई महिला, कर्मचारियों ने कमरे में छिपाया
महानगर मेट्रो ब्यूरो

गोरखपुर। यूपी के गोरखपुर के खजनी तहसील में एक महिला का हाईवोल्टेज ड्रमना देवने को मिला। महिला तहसील में कानूनों को ढूँढते हुए डंडा लेकर पहुंच गई और गंभीर आरोप लगाते हुए गाली देना शुरू कर दिया। महिला ने आरोप लगाया कि 10 हजार रुपये लेने के बावजूद अब कानूनों नाले की पैमाइश करने से मना कर रहा है। महिला तहसील परिसर में शोर मचाते हुए कानूनों को ढूँढती रही। इसकी वजह से तहसील वहां अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया। कर्मचारी भी महिला के रौद्र रूप को देखकर डर गए। उन्होंने कानूनों को एक कमरे में बंद कर दिया। जैसे ही हंगामे की जानकारी अधिकारियों को हुई तो मौके पर एसपीडीएम खजनी पहुंचे और महिला को निपटख जांच का भरोसा दिया। तब महिला शांत हुई। उसके हंगामे का वीडियो इंटरनेट पर सामने आया है।



सिकरीगंज थाना क्षेत्र के ढाडी जेत गांव की पुष्पा देवी गुरुवार को हाथ में डंडा लेकर खगनाी तहसील पहुंची और जेोर-जेोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। महिला लखनौत कानूनगो के खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग कर रही थी। इस कानूनना वहा डंडा लेकर कानूनगो को खोजती रही। महिला का आरोप था कि कानूनगो ने उससे बीते अक्टूबर में एक नाले के पैमाइश के नाम पर 10 हजार अनुसूचे रिक्कत के रूप में लिा थे। अब वह मना कर रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, महिला ने तहसील परिसर में आधे घंटे तक हंगामा किया। स्थिति बिगड़ती देख तहसील कमिश्नरियों ने संबंधित कानूनगो को सभागार कक्ष में सुर्षित करके बाहर से दरवाजा बंद कर दिया।

गाजियाबाद। मेरेठ के ललिता गौतम प्रकरण में पीड़ित परिवार ने गाजियाबाद के ग्रेट हाउस में सीएम योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। सीएम योगी आदित्यनाथ ने परिवार को 5 लाख की मदद और एक-एक मुख्यमंत्री आवास देने के निर्देश दिए साथ ही सीएम योगी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि दोषियों पर एक्सन होगा। सीएम ने घटना पर गहरा दुःख व्यक्त किया। गाजियाबाद के पीडब्ल्यूओ ग्रेट हाउस में सीएम योगी ने ललिता गौतम के परिवार से मुलाकात की। सीएम योगी ने कहा कि दोषी किसी भी सूत्र में बख्शे नहीं जाएंगे। ललिता गौतम प्रकरण को लेकर सीएम सख्त नजर आए। उन्होंने अधिकारियों को विवेचना पर लापरवाही पर कठोर कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

सीएम ने आरोपियों को कठोर सजा दिलवाने के लिए परिवार को भरोसा दिलाया है। सीएम ने पीड़ित परिवार को मुख्यमंत्री सहायता कोष से 5 लाख रुपये आर्थिक मदद देने के लिए निर्देश दिए। इस दौरान मृतका के पिता और बच्चा को एक-एक मुख्यमंत्री आवास देने के लिए भी सीएम ने निर्देश दिया है। सीएम ने पीड़ित परिवार का आयुष्मान कार्ड, पशान कार्ड समेत अन्य सभी लाभार्थी योजनाओं का लाभ देने के लिए भी निर्देश दिया है।

मेरठ के टीपी नगर क्षेत्र के गगन एंक्लेव में रहने वाली 20 वर्षीय ललिता गौमिस की हत्या कर दी गई थी। बाद वीए की पढ़ाई कर रही थी। 15 मई को परीक्षा देने के लिए घर से निकलती ललिता गौमिस देर शाम तक वापस नहीं लौटाईं, तो परिजनों ने उसकी ललाटा की मारर उनका कोई पता नहीं चला। जिसके बाद परिजनों ने 16 मई को थाना टीपी नगर में गुमशुदगी दर्ज कराई। पुलिस ने नांवां शुरू की तो सीसीटीवी फुटेज में ललिता गगन कल्याणपुर निवासी अंशुका नाम के युवक के साथ युवती दिखाई दीं। पुलिस जांच के दौरान आरोपी अंशुका को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में उसने ललिता की हत्या करने की बात कबूल कर ली। पुलिस के मुताबिक, अंशुका और ललिता के बीच प्रेम संबंध थे। कटना वाले दिन दोनों साथ थी। इसी दौरान आरोपी ने ललिता के मोबाइल फोन में कुछ फोटो और चैट देखीं, जिसके बाद उसने एक शूट हुआ कि उसका किसी अन्य युवक से भी संबंध है। आरोपी ने ललिता की हत्या कर दी और शव को मेरठ के रोहटा थाना क्षेत्र के उपसिया जंगल स्थित गन्ने के खेत में फेंक दिया।

पचमढ़ी छुटी मनाने जा रहे बेगमगंज के सरकारी डॉक्टरों की टीम ने रायसेन में सड़क हादसे के शिकार एक गंभीर घायल युवक को मौके पर ही सीपीआर देकर उसकी रुकी हुई सांसें वापस लौटा दीं और जान बचाई

रायसेनबी। मध्य प्रदेश के रायसेन जिले से डॉक्टरों के देवदत्त बन्ने की एक बेहद भावुक कर देने वाली तस्वीर सामने आई है। बेगमगंज सिविल अस्पताल के सरकारी डॉक्टरों की एक टीम शुक्रवार शाम दो दिन की छुट्टी मनाने के लिए पचमढ़ी जा रही थी। अभी भोपाल-जबलपुर हाईवे पर बरौली कस्बे से करीब 5 किलोमीटर दूर दो तेज रफ्तार बाइकों की आगने-सामने जोड़दार टक्कर हो गई। इस भीषण हादसे में बानियाखेड़ी गांव के रहने वाले नरेंद्र नाम्क युवक को गंभीर चोटें आई और कुछ ही पलों में उसकी सांसें चलना बंद हो गईं। मौके पर ही दिया सीपीआर, लौट आई सांसें उसी वक्त वहां से गुजर गईं बेगमगंज के ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर डॉ. नितिन तोमर, डॉ.

अमन सेन, डॉ. अभिषेक साहू और डॉ. चंद्रमोहन गुप्ता ने सड़क पर घायल को तड़पाता देख तुरंत अपनी गाड़ी रोकी। एम्बुलेंस को इंजॉन कर लिए बिना, डॉक्टरों ने सस्य की नज्जकत को समझा और डॉ. नितिन ने नज्जकत में सड़क पर ही नरेंद्र को कार्डियोपल्मोनरी रिससिलेशन देना शुरू कर दिया। कई मिनों तक श्ण कतर हत्ता को क्रेस करे के बाद चमकारिक रूप से नरेंद्र की रूकी हुई सांस फिर से चलने लगीं। डॉक्टरों ने बिना देर किए घायल युवक को अपनी ही गाड़ी में लादा और पास के नज्दीकी अस्पताल पहुँचाया, जहाँ फिलहाल उसका इलाज जारी है। हादसे का स्थान: पोलीस-जब्तपूर हावड़े, बरौली क्शेत्र के पास (रायसेन)। फरिश्ता बने डॉक्टरों बेगमगंज सिविल अस्पताल के बीएमओ डॉ. नितिन तामर और

उनकी टीम।

त्वरित एक्शन: मौक़े पर ही तत्काल सिपीआर देकर सांसें वापस लाई गईं और खुद के वाहन से अस्पताल पहुंचाया। भोपाल-जबलपुर हाईवे बिना सरकारी प्रोटोकॉल या एम्बुलेंस का इंतज़ार किए उठाया गया यह कदम वाकई काबिले तारीफ़ है।

का बोली और बाड़ी वाला पैच अक्सर तेज रफ्तार वाहनों के कारण एक्सीडेंट प्रोन एरिया माना जाता है। हादसे के बाद गोल्डन ऑफर (शुरुआती कीमती मिनट) में इलाज न मिलने से कई लोग जान गंवा देते हैं। ऐसे में डॉक्टरों की मौजूदगी और बिना सरकारी प्रोटोकॉल या एम्बुलेंस का इंतजार किए उठना गया यह कदम वाकई काबिले तारीफ है।

प्रोटोकॉल से परेशान लोग देखे तो इशारे से खुलवा दिया ट्रैफिक

उज्जैन। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 जुलाई को उज्जैन प्रवास पर थे। इस दौरान की उनकी एक वीडियो काफी चर्चा में है। प्रवास के दौरान सीएम बेहद अलग और सादगी भरे अंदाज में नजर आए। उन्होंने सिंहस्थ-2028 की तैयारियों के अंतर्गत चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों का जायजा लेने के लिए किसी लाव-लशकर का इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि वे खुद दोपहिया वाहन पर सवार होकर और पैदल चलकर सड़कों पर निकल पड़े। सीएम ने उज्जैन के फ्रीगंज में निर्माणाधीन नए ओवरब्रिज और कोयला फाटक से लेकर कंठाल चौरोहे तक चल रहे मांग चौड़ीकरण के कार्यों का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने मौके पर मौजूद प्रशासनिक अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि जितने भी काम अधूरे हैं, उनकी गति बढ़ाई जाए और उन्हें समय पर पूरा किया जाए।

निरीक्षण के दौरान उज्जैन की सड़कों पर एक गजब वाकया देखने को मिला। जब सीएम पैदल

महानगर मेट्रो ब्यूरो

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए देश के 75 स्टेशनों के साथ मध्य प्रदेश के 13 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों को राष्ट्र को समर्पित किया। केंद्र सरकार की 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत इन पुराने स्टेशनों का पूरी तरह कायाकल्प किया गया है।



सीसीटीवी कैमरे और कम बिजली खपत वाली एलईडी लाइट्स लगाई गई हैं। री-डेवलपमेंट की मुख्य विशेषताएं मध्य प्रदेश के 13 प्रमुख स्टेशनों का जीर्णोद्धार। बड़े वेटिंग हॉल, डिजिटल एलईडी बोर्ड डिस्प्ले, रिफ्रिजर्ड रेस्ट रूमा। चौबीसों घंटे सीसीटीवी निगरानी और एनर्जी-एफिशिएंट एलईडी लाइटिंग। बुलेटखंड, महाकौशल, विद्य और मध्य भारत के स्टेशनों को बड़ा फायदा।

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए देश के 75 स्टेशनों के साथ मध्य प्रदेश के 13 पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों को राष्ट्र को समर्पित किया। केंद्र सरकार की 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत इन पुराने स्टेशनों का पूरी तरह कायाकल्प किया गया है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य स्टेशनों को आधुनिक रेल यात्रा के अनूकूल बनाना है, साथ ही वहां की स्थानीय संस्कृति और विरासत को भी संजोकर रखना है। जिन स्टेशनों को नया रूप मिला है, उनमें विरिंशा, सांची, अशोकनगर, शिवपुरी, ब्यौराही, भिंड, हज्जालपुर, छतरपुर, टीकमगढ़, जुनारदेव, बालाघाट, छिंदवाड़ा और नैनपुर शामिल हैं।



सीसीटीवी कैमरे और कम बिजली खपत वाली एलईडी लाइट्स लगाई गई हैं। री-डेवलपमेंट की मुख्य विशेषताएं मध्य प्रदेश के 13 प्रमुख स्टेशनों का जीर्णोद्धार। बड़े वेटिंग हॉल, डिजिटल एलईडी डिस्प्ले, रिफ्रिजर्ड रेस्ट रूम। चौबीसों घंटे सीसीटीवी निगरानी और एनर्जी-एफिशिएंट लाइटिंग। बुंदेलखंड, महकौशल, विंध्य और मध्य भारत के स्टेशनों को बड़ा फायदा।

मध्य प्रदेश के इन चुनिंदा स्टेशनों जैसे सांची और विदिशा में पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है। वहीं छिंदवाड़ा और बालाघाट जैसे आदिवासी बहुल और खनिज समृद्ध क्षेत्रों के स्टेशनों के अपग्रेड होने से स्थानीय यात्रियों को टिकट काउंटर और प्लेटफॉर्म तक पहुंचने में अब काफी आसानी होगी।

भोपाल के हमीदिया अस्पताल में डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर 5 साल के बच्चे के गले से पेट में जा रहा टूटा हुआ दूधब्रश सुरक्षित निकाला. डॉक्टरों ने माता-पिता के लिए जारी की बड़ी चेतावनी

भोपाल। MP की राजधानी भोपाल में एक 5 वर्षीय मासूम के साथ दर्दनाक हत्याकांड हो गया. दांत साफ करते समय दूधब्रश अचानक टूट गया और उसका टूटा हुआ हिस्सा बच्चे के मुँह से होत हुए गले में गहराई तक फंस गया. बच्चे को तेज दर्द, बोलने और निगलने में परेशानी होने लगी. घरवाए परीजन उसे तत्काल हमीदिया अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने समय रहते ऑपरेशन कर उसकी जान बचा ली. हमीदिया अस्पताल में जांच के दौरान डॉक्टरों ने पाया कि दूधब्रश का टूटा हुआ हिस्सा गले के अंदर संवेदनशील हिस्से में फंसा हुआ है. स्थिति गंभीर होने के कारण इण्टनी विशेषज्ञों की टीम ने तुरंत ऑपरेशन करने का फैसला लिया. ऑपरेशन के दौरान डॉक्टरों ने बेहद सावधानी से दूधब्रश का टूटा हुआ हिस्सा बाहर निकाला. पूरी प्रक्रिया सफल रही और बच्चे को किसी तरह की गंभीर क्षति नहीं पहुंची. हमीदिया अस्पताल की डॉ कीर्ति वाईके ने बताया कि इलाज में थोड़ी भी देरी होती तो दूधब्रश का हिस्सा रक्ताश नली या भोजन नली को चुकसाना पहुंचा सकता था. इससे संक्रमण, अत्यधिक रक्ताश्राव या सांस

लेने में गंभीर परेशानी आ सकती थीं. समय पर विशेषज्ञों की त्वरित कृति बच गई. फिलहाल मासूम उसे डॉक्टरों की निगरानी में है.

‘ब्रश करते समय

डॉ कीर्ति वाईके ने अतिरिक्त बताया कि छोटे बच्चों को ब्रश

लेने में गंभीर परेशानी जैसी जटिलताएं पैदा हो सकती थीं। समय पर अस्पताल पहुंचने और विशेषज्ञों की त्वरित कार्यवाई से बच्चे की जान बच गई। फिलहाल मासूम की हालत स्थिर है और उसे डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया है।

डॉ कीर्ति वाईके ने अभिभावकों से अपील की है कि छोटे बच्चों को ब्रश करते समय कभी अकेला

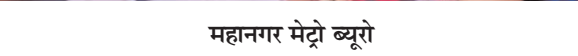
5

महानगर मेट्रो ब्यूरो

लखनऊ। आसिफ खान, लखनऊ यूपी की राजधानी लखनऊ में शनिवार सुबह एक दिल दहला देने वाला सड़क हादसा सामने आया है। सरोजनी नगर इलाके में कानपुर रोड पर एक तेज रफ्तार पिकअप ने साइकिल सवार पीएसई के हेड कॉन्स्टेबल को जोरदार ठक्कर मार दी। ठक्कर इतनी भीषण थी कि हेड कॉन्स्टेबल गाड़ी के नीचे फँस गए और चालक उन्हें साइकिल समेत करीब 20 मीटर तक घसीटा हुआ ले गया। मौके पर मौजूद राहगीरों और पुलिस ने शोकाचकार किसी तरह वाहन को रूकवाया और चालक को बाहर निकाला। उन्हें गंभीर हालत में कृष्णनगर स्थित लोकबंधु अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहाँ उनका इलाज चल रहा है। पुलिस के मुताबिक, मूल रूप से 32वीं वाहिनी पीएसजी बटालियन परिसर में अपने परिवार के साथ रहने वाले उपन्यासकार राय (56) हेड कॉन्स्टेबल के पद पर तैनात हैं। शनिवार सुबह करीब 7 बजे वह रोज की तरह साइकिल से मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। साइकिल करीब 8 बजे जब वह वापस घर लौट रहे थे, तभी 32वीं वाहिनी के पास सड़क बार करते समय एयरपोर्ट की तरफ से आ रहे तेज रफ्तार पिकअप ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया।

बसवास होते ही मौके पर चीख-पुकार मच गई। पिकअप चालक ब्रेक मारने की बजाय घायल हेड कॉन्स्टेबल को घसीटता रहा। यह देख आवासपास मौजूद लोगों और पुलिसकर्मियों ने मुस्तेदी दिखाई और शोर मचाते हुए गुराबंदी कर किफअप को रुकवाया। घटना की सूचना मिलते ही आरोजजीनगर थाने की पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने आरोपी चालक को वाहन को कब्जे में ले लिया है और मामले की आगे की कानूनी कार्रवाई में जुट गई है।

कर मारा... खूबसूरत पत्नी की खौफनाक कहानी



मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले से एक बेहद सनसनीखेज हत्याकांड सामने आया है। पुलिस के मुताबिक एक स्कूल संचालक की हत्या को पहले सांप के काटने से हुई सामान्य मौत माना जा रहा था, लेकिन जांच में मामला सुनिश्चित हत्या का निकला। मृतक की पत्नी का अपने ड्राइवर से प्रेम संबंध था और दोनों ने पति को रास्ते से हटाने की साजिश रची।

पुलिस के अनुसार योजना के तहत पत्नी ने पहले अपने पति को नशीला दूध पिलाकर बेहोश कर दिया, इसके बाद प्रेमी झुड़कर और उसके दोनों साथियों ने सपरों से लाए गए जहरीले साप को बेड़ पर छोड़ दिया, ऐसे में पत्नी को सो रहे स्कूल संचालक को कई बार उड़ा, जिससे उसकी मौत हो गई। आरोपियों ने इसे प्राकृतिक घटना दिखाने की कोशिश की ताकि किसी को उन पर शक न हो, लेकिन परिजनों को पहले पत्नी की करतूत पर शक हो गया था।

बलाकियां शुरूआती जांच में पुलिस को घटना संदिग्ध लगी. इसके बाद तकनीकी साक्ष्यों, पुछताछ और अन्य सबूतों के आधार पर पूरे मामले का खुलासा हो गया. पुलिस में बताया कि पत्नी, उसके प्रेमी इंड्रान और दो अन्य आरोपियों की भूमिका सामने आई है. सभी के खिलाफ हत्या और आपराधिक साजिश सहित संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है. पुलिस के मुताबिक योजना के तहत गुरवार रात पत्नी दामिनी ने पति अतुल को दूध में नींद की गोलीयां दी. जिससे वह नींद नींद में चला गया. इसके बाद सौ और उदय की मदद से जहरीले दवाओं को कमरे में लाकर उसके कंबल में छेड़ दिया गया, जिससे सांप ने अतुल को इस लापरवाही और उसकी मौत हो गई. पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि अतुल के नाम करीब 20 लाख रुपये का बीमा था. आरोपियों ने बीमा की रकम मिलने के बाद सहयोग करने वाले सौ और उदय को पांच लाख रुपये देने का वादा किया था. इसके अलावा करीब 20 दिनों पहले भी आरोपण ने अतुल को अर्दंगा करा. इसके मारका मारने का प्रयास किया था, लेकिन हलमेट पहने होने के कारण वह बच गया था.

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पञ्चनङ्ग। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को संभल में 550 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। इसी के साथ वे संभल की इतिहासिक और पौराणिक पहचान को विश्व पटल पर और धार्मिक पर्यटन के मानचित्र पर स्थापित करने के लिए बड़ी नींव रखने जा रहे हैं।

यहाँ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ संभल में 300 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले 52 किलोमीटर लंबे 24 कोसीय परिक्रमा मार्ग का लोकार्पण करेंगे, वहीं पर्यटन विभाग और वंदन योजना से संभल के 68 तीर्थों में से 4 प्रमुख तीर्थों पर होने वाले विकास की सीमागत की छत्रयोजी देंगे। हालांकि 24 नवंबर 2024 की हिंसा के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बसे ताल 7 अगस्त 2025 को संभल जिले के दौरे पर आए थे तो मुख्यमंत्री योगी ने संभल के सभी तीर्थों का विकास उत्तर प्रदेश की सरकार के द्वारा कराए जाने का ऐलान किया था, लेकिन एक साल पूरा होने से पहले सीएम योगी जब दोबारा संभल दौरे पर आए हैं तो इस बार 24 कोसीय परिक्रमा मार्ग के नवनिर्माण की सीमागत देकर संभल की पौराणिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पहचान को विश्व पटल पर स्थापित करने की तरफ बड़ा कदम उठाने जा रहे हैं 24 नवंबर 2024 की हिंसा के बाद संभल के तीर्थ व कुपों की बहहली और तीर्थ की जमीनों पर अवैध कब्जे होने आने के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 7 अगस्त 2025 को पहली बार संभल जिले की दौरे पर आए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संभल के तीर्थ की बहहली को बयान करते हुए संभल के तीर्थों 68 तीर्थ और 19 प्राचीन कुपों को उत्तर प्रदेश की सरकार के द्वारा विकसित कराए जाने के फैसले का ऐलान किया था। धार्मिक स्थलों को विकसित कराए जाने के साथ ही संभल को 2027 की प्रयोगशाला माना जाने लगा था। लेकिन योगी के ऐलान के साथ ही संभल के तीर्थों को नवीनीकृत करने के लिए तीर्थ पर जीर्णोद्धार का कार्य शुरू कर दिया गया।



बिगड़ती सेहत के बावजूद अनशन पर अड़े थे सोनम वांगचुक
डॉक्टरों ने 5 दिन पहले ही दी थी अस्पताल जाने की सलाह

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के जंतर मंतर पर सीजेपी प्रदर्शन पर जारी है। दिल्ली पुलिस ने शनिवार को सीजेपी के बैनर तले लगभग 20 दिनों से भूख हड़ताल पर बैठे सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को जबरन जंतर मंतर से हटा दिया और इलाज के लिए सफदरजंग अस्पताल भेज दिया है। इसी बीच सोनम वांगचुक की जांच कर रहे डॉक्टरों का एक बयान सुर्खियों में आ गया है।

हालत को देख कर पहले दी थी डॉक्टरों ने सलाह

सामाजिक कार्यकर्ता की जांच कर रही मेडिकल टीम ने कहा कि सोनम वांगचुक को बिगड़ती हालत को देखते हुए उन्हें जरूरी मेडिकल देखभाल के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां हर समय डॉक्टरों की पूरी निगरानी में रहेंगे। इस कड़ी में सफदरजंग अस्पताल ने भी उनका हेल्थ अपडेट जारी करते हुए बताया कि लंबे समय से उपवास और डिहाइड्रेशन की वजह से सोनम वांगचुक कमजोर हो गए हैं। लेकिन हालत स्थिर है। हालांकि शरीर अस्पताल ने स्पष्ट किया कि शरीर के पैरामीटरसं को सामान्य करने के लिए इलाज और निगरानी जरूरी है। आपको बता दें कि 20 जून से दिल्ली के जंतर मंतर पर कांक्रोच जनता पार्टी (सीजेपी) का विरोध प्रदर्शन जारी है। सीजेपी समर्थक हर दिन पूरी शक्ति के साथ शिक्षा मंत्री धर्मंद प्रधान और शिक्षा प्रणाली में कथित गड़बड़ियों के लेकर अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। वहीं सोमन वांगचुक भी 28 जून से अपनी मांगों के साथ भूख हड़ताल पर हैं।

सफदरजंग अस्पताल ने जारी किया हेल्थ बुलेटिन

दिल्ली पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि सोनम वांगचुक की बिगड़ती तबीयत को देखते हुए उन्हें जरूरी मेडिकल देखभाल के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां हर समय डॉक्टरों की पूरी निगरानी में रहेंगे। इस कड़ी में सफदरजंग अस्पताल ने भी उनका हेल्थ अपडेट जारी करते हुए बताया कि लंबे समय से उपवास और डिहाइड्रेशन की वजह से सोनम वांगचुक कमजोर हो गए हैं। लेकिन हालत स्थिर है। हालांकि शरीर अस्पताल ने स्पष्ट किया कि शरीर के पैरामीटरसं को सामान्य करने के लिए इलाज और निगरानी जरूरी है। आपको बता दें कि 20 जून से दिल्ली के जंतर मंतर पर कांक्रोच जनता पार्टी (सीजेपी) का विरोध प्रदर्शन जारी है। सीजेपी समर्थक हर दिन पूरी शक्ति के साथ शिक्षा मंत्री धर्मंद प्रधान और शिक्षा प्रणाली में कथित गड़बड़ियों के लेकर अपना विरोध दर्ज करा रहे हैं। वहीं सोमन वांगचुक भी 28 जून से अपनी मांगों के साथ भूख हड़ताल पर हैं।

जंतर-मंतर पर अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे CJP
संस्थापक अभिजीत दिपके पर एक महिला ने इंक फेंक दिया.

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। जंतर-मंतर पर शनिवार को उस समय हंगामा मच गया, जब कांक्रोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके पर एक महिला ने स्याही फेंक दिया. घटना उस वक्त हुई जब दिपके मंच से प्रदर्शनकारियों को संबोधित कर रहे थे. अचानक हुई इस घटना से कुछ देर के लिए कार्यक्रम बाधित हो गया और मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया. घटना के तुरंत बाद वहां मौजूद लोगों ने महिला को पकड़ लिया और दिल्ली पुलिस के हवाले कर दिया. पुलिस उससे पूछताछ कर रही है. हालांकि, महिला की पहचान और उसने यह कदम क्यों उठाया, इसका फिलहाल खुलासा नहीं हो सका है. पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है. अभिजीत दिपके ने शनिवार सुबह ही अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की थी. उन्होंने यह फैसला तब लिया, जब दिल्ली पुलिस ने जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को जंतर-मंतर से हटाकर सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया. दिपके ने आरोप लगाया कि पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर कार्रवाई कर आंदोलन को दबाने की कोशिश की है. दिपके ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर ऐलान किया कि वह तत्काल प्रभाव से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठ रहे हैं. उन्होंने यह भी कहा कि 20 जुलाई को प्रस्तावित 'चलो संसद' मार्च अपने तय कार्यक्रम के अनुसार निकाला जाएगा. इससे पहले शनिवार सुबह दिल्ली पुलिस ने जंतर-मंतर पर चल रहे प्रदर्शन को हटाने की कार्रवाई की थी. पुलिस ने बताया कि सोनम वांगचुक की लगातार बिगड़ती सेहत और दिल्ली हाईकोर्ट के निर्देशों के मद्देनजर उन्हें विशेषज्ञ डॉक्टरों की सलाह पर सफदरजंग अस्पताल ले जाया गया. पुलिस ने प्रदर्शनकारियों से भी अपील की कि वे शांतिपूर्वक प्रदर्शन स्थल खाली कर दें. गौरतलब है कि सोनम वांगचुक ने NEET परीक्षा में कथित अनियमितताओं और शिक्षा मंत्री धर्मंद प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर भूख हड़ताल शुरू की थी. शनिवार को उनका अनशन 21वें दिन में प्रवेश कर गया था. वांगचुक को अस्पताल ले जाए जाने के बाद अभिजीत दिपके ने आंदोलन की कमान संभालते हुए खुद अनिश्चितकालीन अनशन शुरू किया.

दिल्ली में दिल दहला देने वाली वारदात
SUV से कुचलकर शस्त्र की हत्या

महानगर मेट्रो ब्यूरो

दिल्ली। कंझावला इलाके में 16 जुलाई को 44 वर्षीय दीपक की स्ट्रु से कुचलकर हत्या के मामले में पुलिस ने आरोपी चालक सागर को गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस के मुताबिक आरोपी ने पहले स्कूटी को टक्कर मारी, फिर सड़क पर गिरे दीपक के ऊपर स्ट्रु चढ़ा दी और वाहन को पीछे कर दोबारा कुचल दिया. स्कूटी को स्कूटी मीटर तक कार में फंसी रही. आरोपी ने हत्या की बात कबूल की है, जबकि पुलिस वारदात के पीछे किसी बड़ी साजिश की आशंका को लेकर जांच कर रही है. दिल्ली के कंझावला थाना क्षेत्र में 16 जुलाई को हुई एक सनसनीखेज वारदात का पुलिस ने खुलासा करते हुए आरोपी स्ट्रु चालक को गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस के मुताबिक माजरा डबास निवासी 44 वर्षीय दीपक की मौत सड़क हादसे में नहीं, बल्कि जानबूझकर स्ट्रु से कुचलकर की गई हत्या थी. मामले में गिरफ्तार आरोपी की पहचान सागर के रूप में हुई है. पुलिस जांच के अनुसार, दीपक अपनी स्कूटी से किसी काम से निकलते थे. इसी दौरान आरोपी सागर ने अपनी स्ट्रु से उनकी स्कूटी को टक्कर मार दी. टक्कर लगने से दीपक सड़क पर गिर पड़े, लेकिन आरोपी ने वाहन रोकने या उनकी मदद करने के बजाय स्ट्रु की रफ्तार बढ़ा दी और उन्हें कुचल दिया. जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी ने दीपक के ऊपर पहले आगे से कार चलाई और फिर वाहन को पीछे करके दोबारा उन्हें कुचल दिया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई.

पुलिस को हत्याकांड में बड़ी साजिश की आशंका

सूत्रों के मुताबिक टक्कर के बाद दीपक की स्कूटी स्ट्रु में फंस गई थी, जिसके कारण वाहन उन्हें और स्कूटी को कुछ मीटर तक घसीटता हुआ ले गया. घटना के बाद पुलिस ने मौके से स्ट्रु को जब्त कर लिया और आरोपी सागर को गिरफ्तार कर लिया. पूछताछ के दौरान आरोपी ने हत्या करने की बात स्वीकार कर ली है, लेकिन वारदात के पीछे की वजह को लेकर वह अलग-अलग बयान दे रहा है. इसी कारण पुलिस को इस हत्याकांड में किसी बड़ी साजिश की आशंका भी नजर आ रही है. पुलिस आरोपी से लगातार पूछताछ कर रही है और उसके बयानों का सत्यापन किया जा रहा है. फिलहाल पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मामले की गहन जांच कर रही है. अधिकारियों का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी और यदि किसी अन्य व्यक्ति की संलिप्तता सामने आती है तो उसके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी.

शरद पवार नाराज, सोनम वांगचुक के अनशन तुड़वाने के तरीके
पर भड़के, दिल्ली पुलिस की कार्रवाई को बताया गैरजिम्मेदाराना
पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार ने सोनम वांगचुक के आंदोलन को लेकर केंद्र सरकार के
रतैये की आलोचना की। शरद पवार ने इस कदम को गैर-जिम्मेदाराना बताया

महानगर मेट्रो ब्यूरो

पुणे। दिल्ली पुलिस ने शनिवार सुबह जंतर-मंतर पर पिछले 20 दिनों से भूख हड़ताल पर बैठे सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को अस्पताल में भर्ती करा दिया है। सोनम वांगचुक को जबरन अस्पताल में भर्ती कराने पर विपक्ष ने सरकार को घेरेते हुए इसे 'गुंडागर्दी' और 'तानाशाही' करार दिया है। वहीं राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने सोनम वांगचुक के आंदोलन को लेकर केंद्र सरकार के रतैये की आलोचना की। शरद पवार ने इस कदम को गैर-जिम्मेदाराना बताया। उन्होंने दावा किया कि सरकार छात्रों की वास्तविक मांगों पर ध्यान देने के बजाय मूकदर्शक बनी रही। शनिवार को बारामती में पत्रकारों से बातचीत में शरद पवार ने कहा कि स्थिति नियंत्रण से बाहर होने पर सरकार ने वांगचुक को अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन उनके खिलाफ को गई कार्रवाई के बावजूद आंदोलन जारी

ऑल इंडिया जैन जर्नीलिस्ट एसोसिएशन में बड़ा संगठनात्मक बदलाव: पवन जैन पदमावत बने राष्ट्रीय संगठन महामंत्री

महानगर मेट्रो ब्यूरो

मुंबई। देशभर के जैन पत्रकारों के सबसे सक्रिय राष्ट्रीय संगठनों में शामिल ऑल इंडिया जैन जर्नलिस्ट एसोसिएशन ने संगठन को और अधिक मजबूत एवं प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी पवन जैन पदमावत को राष्ट्रीय संगठन महामंत्री नियुक्त किया है। इससे पहले वे संगठन में महाराष्ट्र प्रदेश सचिव एवं प्रभावी बनाने के लिए कार्य कर रहे थे। संगठनात्मक कार्यों में उनकी सक्रियता, नेतृत्व क्षमता, समर्पण एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए उन्हें राष्ट्रीय स्तर की यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह नियुक्ति संस्था के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष हार्दिक हुंडिया के नेतृत्व एवं अनुमोदन से की गई। राष्ट्रीय महासचिव महावीर श्रीश्री माल ने इसकी घोषणा करते हुए बताया कि पवन जैन पदमावत अब संगठन के राष्ट्रीय विस्तार, विभिन्न राज्यों में नई इकाइयों के गठन, संगठनात्मक गतिविधियों के समन्वय तथा देशभर के जैन पत्रकारों को एक मजबूत मंच पर जोड़ने का कार्य करेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उनके अनुभव और कार्यशैली से संगठन को नई दिशा

महाराष्ट्र में NCP की सियासी हलचल के बीच BJP का संदेश, दोनों गुटों के विलय के बाद ही NDA में एंट्री!

महानगर मेट्रो ब्यूरो

महाराष्ट्र। एनसीपी के दोनों धड़ों के बीच विलय की चर्चा तेज हो गई है. सूत्रों के हवाले से खबर है कि बीजेपी ने इस मामले में साफ संदेश दिया है. बीजेपी का कहना है कि अगर एनसीपी के दोनों गुट एनडीए में शामिल होना चाहते हैं तो पहले उन्हें आपस में विलय करना होगा. शरद पवार गुट को अलग से एनडीए में शामिल करने पर बीजेपी राजी नहीं है. साथ ही यह भी साफ किया गया है कि एनसीपी का विलय बीजेपी में नहीं होगा. सूत्रों के मुताबिक, यह पूरा मामला परिसीमन बिल से जुड़ा हुआ है. एनसीपी शरद पवार गुट का इस बिल पर रुख नरम बताया जा रहा है और यह गुट बिल का समर्थन कर सकता है. एनसीपी एसपी के पास आठ लोकसभा सांसद और एक राज्यसभा सांसद हैं. परिसीमन बिल को पास कराने के लिए इन नौ सांसदों का समर्थन बीजेपी के लिए बेहद जरूरी माना जा रहा है. इसी वजह से बीजेपी दोनों गुटों के विलय पर जोर दे रही है. सूत्रों का कहना है कि अगर दोनों धड़ों का विलय होता है तो बाद में दोनों तरफ से एक एक मंत्री पद दिया जा सकता है.

लिप्सिटक लगाई, चूड़ियां पहनाई और किया मेकअप, भुसावल
वर्धा ट्रेन में बैड टच करनेवाले को लड़की ने सिखाया सबक

महानगर मेट्रो ब्यूरो

वर्धा। महाराष्ट्र से एक दिलचस्प खबर सामने आई है। यहां भुसावल-वर्धा पैसेंजर ट्रेन में एक युवती ने बहादुरी दिखाई। ट्रेन में लड़कियों के साथ यौन उत्पीड़न करने वाले व्यक्ति को ऐसा सबक सिखाया जिसे वह कभी नहीं भूलेगा। लड़की ने शोहदे को पकड़ा। उसकी जमकर पिटाई की और फिर सीट पर उसे बिठाकर लिप्स्टिक लगाई। उसे चूड़ियां पहनाई और उसका वीडियो बनाया। इस घटना को देखने वाले हर शस्त्र ने मोबाइल निकाल लिया और इसे अपने मोबाइल कैमरे में कैद कर लिया। बताया जा रहा है कि लड़की भुसावल-वर्धा पैसेंजर ट्रेन में चढ़ा था। इसमें कई लड़कियां थीं। वह लड़कियों के साथ बैड टच कर रहा था। कई लड़कियां सहम कर यहां-वहां दुबक गईं। वह लड़के से बचने के लिए सीट बदलकर दूसरी जगह बैठ गईं। इस दौरान ट्रेन में एक युवती चढ़ी।

युवती की हिम्मत की हो रही तारीफ
 आरोपी युवक ने युवती के साथ भी गंदी हरकत

रहेगा। दरअसल वांगचुक को दिल्ली के जंतर-मंतर पर उनकी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल के 21वें दिन स्वास्थ्य बिगड़ने के बाद सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने कहा कि यह कदम चिकित्सकीय सलाह और दिल्ली हाईकोर्ट के निर्देशों के अनुरूप उठाया

सावधानीपूर्वक नहीं संभाला, जिसका असर कई छात्रों के भविष्य पर पड़ा। सरकार मूकदर्शक बनी रही, जबकि अन्य राजनीतिक दल उनके (वांगचुक के) समर्थन में आगे आए। कांग्रेस और सुप्रिया सुले सहित एनसीपी (एसपी) के नेताओं ने वहां (जंतर-मंतर) जाकर एक

गया। वांगचुक और ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) के तीन कार्यकर्ता नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं और इस विवाद के कारण कथित तौर पर कुछ छात्रों की मौत के विरोध में 28 जून से कांक्रोच जनता पार्टी (कांजपा) के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन के समर्थन में अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर हैं। शरद पवार ने कहा कि केंद्र सरकार ने इस स्थिति को बिगड़ना शुरू होने वाला है और वहां भी इस पर चर्चा होगी। उन्होंने कहा कि वांगचुक पर कार्रवाई के बावजूद आंदोलन जारी रहेगा। दिल्ली हाईकोर्ट वांगचुक की चिकित्सकीय स्थिति की निगरानी कर रहा है और उसने निर्देश दिया है कि उनके स्वास्थ्य की नियमित जांच की जाए तथा आवश्यकता पड़ने पर उन्हें उचित चिकित्सकीय उपचार उपलब्ध कराया जाए। डॉक्टरों ने शुक्रवार को बताया था कि भूख हड़ताल शुरू होने के बाद से वांगचुक का वजन लगभग 9.5 किलोग्राम घट गया है। हालांकि, वांगचुक ने कहा था कि बिगड़ती स्वास्थ्य स्थिति के बावजूद वह अपना अनशन जारी रखने के लिए दृढ़ है।

डिस्ट्रिक्ट जज विनय सिंगल के बाद अब वीणा रानी निलंबित, दिल्ली हाई कोर्ट के कड़े फैसलों से हड़कप

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली हायर ज्यूडिशल सर्विस की अधिकारी वीणा रानी को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया है। कोर्ट ने कहा है कि उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई पर विचार किया जा रहा है। हालांकि, आदेश में आरोपों का ब्योरा सार्वजनिक नहीं किया गया है। इससे चंद रोज पहले ही हाई कोर्ट ने एक अन्य मामले में डिस्ट्रिक्ट जज विनय सिंगल को भी सस्पेंड किया था।

दिल्ली छोड़ने की नहीं होगी अनुमति

15 जुलाई को जारी आदेश के मुताबिक, वीणा रानी का मुख्यालय प्रिंसिपल डिस्ट्रिक्ट एंड सेशंस जज, साउथ-ईस्ट, सांकेत का ऑफिस रहेगा। उन्हें सक्षम अधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना दिल्ली छोड़ने की अनुमति नहीं होगी। सस्पेंशन के दौरान उन्हें नियमों के तहत निगाह भता और अन्य देय भत्ते मिलते रहेंगे। वहीं, डिस्ट्रिक्ट जज विनय सिंगल का सस्पेंशन 10 जुलाई को हाई कोर्ट की फूल कोर्ट ने मंजूर किया। उनके खिलाफ विजिलेंस जांच के बाद यह कार्रवाई की गई। आरोप है कि उन्होंने कोर्ट ऑफशनियर के रूप में ऐसे वकीलों की नियुक्ति की जो पात्र नहीं थे। साथ ही उन्होंने ऐसे न्यायिक आदेश भी पारित किए, जिनसे इन वकीलों को हाई कोर्ट के नियमों में तय सीमा से अधिक मानदेय और भुगतान मिला। यह मामला 20 अगस्त 2025 को एक कोर्ट ऑफशनियर की शिकायत के बाद सामने आया था। इसके बाद चीफ जस्टिस डी.के. उपाध्याय ने विजिलेंस जांच के आदेश दिए थे।

मुस्तफाबाद में दिनदहाड़े मर्डर: दिलशाद मरिजद के पास युवक को दौड़ाकर मारी गोली
दिल्ली के ओल्ड मुस्तफाबाद इलाके में शुक्रवार शाम साजिद उर्फ आलू दादू नाम के एक 24 वर्षीय युवक की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी गई

महानगर मेट्रो ब्यूरो

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में एक बार फिर मुस्तफाबाद इलाके से सनसनीखेज मामला सामने आया है। शुक्रवार शाम दिनदहाड़े एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। वारदात ओल्ड मुस्तफाबाद स्थित दिलशाद मस्जिद के पास हुई। तलाश में लगा दिया है। गोली लगने के बाद युवक को उसके परिचित जीटीबी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

क्या था पूरा मामला?

पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर कई टीमों को आरोपियों की पुलिस के मुताबिक, मृतक की पहचान साजिद उर्फ आलू दादा (24) के रूप में हुई है। वह अपने पिता निसार अहमद और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बाबू नगर की गली नंबर-7 में रहता था। शुक्रवार शाम वह घर के पास मौजूद था। इसी दौरान एक अज्ञात हमलावर ने उस पर गोली चला दी। गोली लगते ही इलाके में अफरा-तफरी मच गई। परिचित उसे तुरंत जीटीबी अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।
जांच में आया सामने

सूचना मिलते ही दयालपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। क्राइम टीम और फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण कर अहम साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 103 (1) के तहत हत्या का मामला दर्ज कर लिया है। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि साजिद का आपराधिक रिकॉर्ड रहा है। उसके खिलाफ हत्या के प्रयास, जबरन वसूली समेत कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।
हर एंगल से मामले की जांच कर रही पुलिस

पुलिस सूत्रों के अनुसार, तीन दिन पहले उसका एक बदमाश से किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। शुरुआती जांच में आशंका जताई जा रही है कि उसी रंजिश के चलते वारदात को अंजाम दिया गया। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है आरोपियों की पहचान और गिरफ्तारी के लिए कई टीमें गठित की गईं



विदेशी मुद्रा भंडार लगातार दूसरे सप्ताह बढ़कर 675.15 अरब डॉलर पहुंचा मुंबई।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने के मुताबिक 10 जुलाई को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 96.4 करोड़ डॉलर बढ़कर 675.15 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। यह लगातार दूसरा सप्ताह है जब भारत के भंडार में वृद्धि दर्ज की गई है, जो मौजूदा आर्थिक परिदृश्य के लिए एक सकारात्मक संकेत है। इससे पिछले सप्ताह में भी विदेशी मुद्रा भंडार में 7.26 अरब डॉलर की उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। उल्लेखनीय है कि 27 फरवरी को पश्चिम एशिया संघर्ष शुरू होने से पहले यह रिकॉर्ड 728.49 अरब डॉलर पर था। हालांकि, संघर्ष के कारण रुपये पर दबाव बढ़ने और आरबीआई के डॉलर बेचकर बाजार में हस्तक्षेप करने से भंडार में कई सप्ताह तक गिरावट आई थी। अब लगातार दूसरे सप्ताह की वृद्धि मौजूदा दबावों से कुछ राहत का संकेत दे रही है।

केंद्रीय बैंक के आंकड़ों के अनुसार समीक्षाधीन सप्ताह में विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 93 करोड़ डॉलर बढ़कर 546.51 अरब डॉलर हो गईं। इसी अवधि में देश के स्वर्ण भंडार का मूल्य 2.4 करोड़ डॉलर बढ़कर 105.22 अरब डॉलर पर पहुंच गया। विशेष आह्रण अधिकार 30 लाख डॉलर बढ़कर 18.63 अरब डॉलर तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के पास भारत का आरक्षित कोष भी 70 लाख डॉलर बढ़कर 4.79 अरब डॉलर दर्ज किया गया है।

इस हफ्ते सोना दो हजार और चांदी में चार हजार रुपए की गिरावट रही 24 कैरेट सोना 1.41 लाख, चांदी 2.15 लाख प्रति किलो के करीब

नई दिल्ली।



इस हफ्ते सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। भू-राजनीतिक तनाव के बीच 24 कैरेट सोना 2,200 रुपए से अधिक और चांदी 4,900 रुपए से ज्यादा सस्ती हुई है। इंडिया बुलियन ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के मुताबिक 24 कैरेट सोने का दाम 2,209 रुपए कम होकर 1,41,159 प्रति 10 ग्राम हो गया है, जो पहले 1,43,368 रुपए था। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,29,302 रुपए और 18 कैरेट सोना 1,05,869 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। इस हफ्ते सोने का न्यूनतम दाम 17 जुलाई की शाम को 1,41,159 रुपए देखा गया, जबकि उच्चतम दाम 13 जुलाई को सुबह 1,42,289 रुपए रहा। सोने के साथ चांदी में भी 4,917 रुपए की तेज गिरावट दर्ज की गई। चांदी का दाम 2,20,390 रुपए प्रति किलो से गिरकर 2,15,474 रुपए प्रति किलो हो गया। चांदी का उच्चतम दाम 15 जुलाई को सुबह 2,20,391 रुपए और न्यूनतम दाम 17 जुलाई को शाम को 2,15,474 रुपए प्रति किलो रहा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस और चांदी 57 डॉलर प्रति औंस के करीब कारोबार कर रही है। विशेषज्ञों के मुताबिक, सोने और चांदी में गिरावट की मुख्य वजह अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव है। एक-दूसरे पर लगातार हमलों के चलते वैश्विक भू-राजनीतिक अनिश्चितता बढ़ी है, जिससे कीमती धातुओं की कीमतों पर दबाव आया है।

आरबीआई ने छह कंपनियों पर लगाया लाखों का जुर्माना



नई दिल्ली।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने नियामकीय मामलों के पालन न करने के कारण छह वित्तीय और गैर-वित्तीय कंपनियों पर कार्रवाई करते हुए जुर्माना लगाया है। इन कंपनियों में प्रमुख रूप से गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) मुथूट फाइनेंस और अवेल फाइनेंशियल सर्विसेज शामिल हैं। यह कार्रवाई केंद्रीय बैंक द्वारा जारी अधिसूचना के बाद की गई है, जिसमें नियमों

रिलायंस के ओ2सी का बंपर मुनाफा, राजस्व 30 फीसदी बढ़ा

कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि और बेहतर मार्जिन रहे प्रमुख कारण

मुंबई।

रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के ऑयल-टु-केमिस्ट्रल्स (ओ2सी) कारोबार ने जून 2026 तिमाही में जोरदार प्रदर्शन किया है। कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और मजबूत मार्जिन के दम पर कंपनी का राजस्व सालाना आधार पर 30 फीसदी बढ़कर 2,01,803 करोड़ रुपये और एबिटा 17 फीसदी बढ़कर 17,010 करोड़ रुपये हो गया। कच्चे तेल की कीमतों, जो होमरुन स्ट्रेट बंद होने से बढ़कर 104.5 डॉलर प्रति बैरल हो गई, इस राजस्व वृद्धि का मुख्य कारण रही। बेहतर ट्रांसपोर्टेशन फ्यूल

क्रैक और डाउनस्ट्रीम मार्जिन ने एबिटा में बढ़ोतरी में योगदान दिया। चेयरमैन मुकेश अंबानी ने वैश्विक बाधाओं और आपूर्ति श्रृंखला में रुकावटों के बावजूद इसे शानदार प्रदर्शन बताया। हालांकि, महंगे फीडस्टॉक की खरीद, निर्धारित रखरखाव और बढ़ती माल ढुलाई व बीमा लागत ने मार्जिन पर दबाव डाला। घरेलू बाजार में, आरआईएल ने ईंधन कीमतें स्थिर रखीं और एलपीजी उत्पादन बढ़ाया, जिससे बिक्री में नुकसान हुआ। डीजल, मोटर स्पिरिट (एमएस) और एटीएफ पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क की पुनः बहाली ने भी मार्जिन को प्रभावित किया।

जून में महिंद्रा एक्सयूवी 400 ईवी की कुल 31 यूनिट बिकीं

नईदिल्ली।

महिंद्रा की एक्सयूवी 400 ईवी को भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन बाजार में जून 2026 में बड़ा झटका लगा है। बिक्री के जारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले महीने

इस मॉडल की केवल 31 इकाइयों की बिक्री दर्ज की गई, जो जून 2025 में बेची गई 231 इकाइयों की तुलना में लगभग 87 प्रतिशत की भारी गिरावट दर्शाती है। इस वजह से कंपनी के लिए एक्सयूवी 400 ईवी की कम बिक्री चिंता का

भू-राजनीतिक तनाव से बेअसर रहा भारतीय शेयर बाजार

हफ्ते की शुरुआत कमजोर, पर अंत में जोरदार उछाल!



मुंबई।

बीते सप्ताह भारतीय शेयर बाजार ने वैश्विक चुनौतियों के बावजूद उल्लेखनीय लचीलापन दिखाया। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण सप्ताह की शुरुआत भले ही कमजोर रही हो, लेकिन निवेशकों के दृढ़ विश्वास और कुछ सकारात्मक घरेलू

संकेतों ने बाजार को अंततः नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की अंतर्निहित शक्ति को दर्शाता है। सप्ताह की शुरुआत सोमवार को निराशाजनक रही, जब पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण सेंसेक्स 650 से अधिक अंक लुढ़का और निफ्टी 24,000 के महत्वपूर्ण स्तर का परीक्षण करता दिखा। हालांकि,

आईटी और उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के शेयरों में मजबूती से बाजार ने दिन के अंत तक लगभग सपाट स्तर पर वापसी कर ली। मंगलवार को फिर से भू-राजनीतिक चिंताओं, विदेशी कोषों की निकासी और वैश्विक बाजारों में कमजोर रुख ने सेंसेक्स और निफ्टी दोनों को लाल निशान पर बंद होने को मजबूर किया। बुधवार को अमेरिकी खुदरा मुद्रास्फीति की धीमी रफ्तार के अनुमान ने एशियाई बाजारों में खरीदारी का माहौल बनाया, जिससे भारतीय बाजार भी हरे निशान पर खुले और मामूली बढ़त के साथ बंद हुए। गुरुवार को पश्चिम एशिया में गहराते संघर्ष के बावजूद भारतीय बाजार ने कमजोर वैश्विक संकेतों को दरकिनार करते हुए मजबूती दिखाई।

हालांकि, एक्सपायरी के दिन और ईरान-अमेरिका युद्ध की अनिश्चितताओं के कारण बाजार सपाट बंद हुए, लेकिन यह भारतीय बाजार की अंतर्निहित स्थिरता का प्रमाण था। सप्ताह का अंत धमाकेदार रहा। शुक्रवार को आईटी कंपनियों के शेयरों में जबरदस्त खरीदारी और टेक महिंद्रा के मजबूत तिमाही नतीजों ने बाजार को नई ऊर्जा दी। जब अमेरिका, जापान और यूरोप जैसे वैश्विक बाजार भारी गिरावट का सामना कर रहे थे, तब भारतीय निवेशकों ने घरेलू बाजार में चौतरफा खरीदारी की। इसके परिणामस्वरूप, सेंसेक्स 964.58 अंक की जोरदार तेजी के साथ 78,151.45 पर और निफ्टी 272.75 अंक चढ़कर 24,345.50 के रिकॉर्ड स्तर पर बंद हुआ।

एसडब्ल्यूपी निवेशकों को नियमित आय प्राप्त करने में मदद करता है, जबकि एसटीपी एक स्कीम से दूसरी में व्यवस्थित निवेश ट्रांसफर करने की सुविधा देता है। इस कदम से डीमैट होल्डिंग वाले निवेशकों को भी वही लचीलापन और सुविधा मिल सकेगी जो अब तक केवल एसओए धारकों को मिलती थी।

डीमैट म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर भी एसडब्ल्यू और एसटीपी संभव, सेबी ने दी मंजूरी

निवेशकों को मिलेगी बड़ी सहूलियत, दो चरणों में 2027 तक पूरी तरह लागू होगी सुविधा

– मुंबई।

बाजार नियामक सेबी ने म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए एक बड़ा फैसला लिया है। अब डीमैट खातों में रखी म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर भी सिस्टमैटिक विट्रॉल प्लान (एसडब्ल्यूपी) और सिस्टमैटिक ट्रांसफर प्लान (एसटीपी) जैसी महत्वपूर्ण सुविधाएं उपलब्ध होंगी। यह कदम उन लाखों निवेशकों के लिए बड़ी राहत लेकर आया है, जो अपनी

म्यूचुअल फंड होल्डिंग को डीमैट फॉर्म में रखते हैं और अब तक इन स्वचालित विकल्पों का लाभ नहीं उठा पा रहे थे। सेबी ने बताया कि यह नई सुविधा दो चरणों में लागू की जाएगी। पहले चरण में, 31 जनवरी, 2027 तक यूनिट-आधारित एसडब्ल्यूपी और एसटीपी के लिए पंजीकरण की अनुमति दी जाएगी, जहाँ निवेशक निश्चित संख्या में यूनिटों को रीडिम या ट्रांसफर कर सकेंगे। दूसरा चरण 30 अप्रैल, 2027 तक

लागू होगा, जिसमें यह सुविधा रकम-आधारित एसडब्ल्यूपी और एसटीपी तक बढ़ाई जाएगी, जिससे निवेशक नियमित अंतराल पर तय राशि निकाल या ट्रांसफर कर पाएंगे। नियामक ने डिपॉजिटरीज को 31 अक्टूबर तक आवश्यक परिचालन व्यवस्था स्थापित करने और सिस्टम में बदलाव करने का निर्देश दिया है। यह बदलाव ऐसे समय में आया है जब ऑनलाइन म्यूचुअल फंड वितरक, जैसे ग्रे, निवेशकों को

स्ट्रेटमेंट ऑफ अकाउंट से डीमैट होल्डिंग की ओर तेजी से प्रेरित कर रहे हैं।

एसडब्ल्यूपी निवेशकों को नियमित आय प्राप्त करने में मदद करता है, जबकि एसटीपी एक स्कीम से दूसरी में व्यवस्थित निवेश ट्रांसफर करने की सुविधा देता है। इस कदम से डीमैट होल्डिंग वाले निवेशकों को भी वही लचीलापन और सुविधा मिल सकेगी जो अब तक केवल एसओए धारकों को मिलती थी।

फीफा फाइनल से अर्थव्यवस्था को बूस्ट, विज्ञापन दरों में दस गुना उछाल

रेस्तरां, पब, मल्टीप्लेक्स और फूड डिलिवरी कंपनियों के लिए में कारोबार का सुनहरा अवसर

मुंबई।

पिछले लगभग 39 दिनों से दुनिया भर के खेल प्रेमियों पर छाया फीफा विश्व कप फुटबॉल का खुमार अब अपने चरम पर पहुंच गया है। रविवार देर रात अर्जेंटीना और फ्रांस के बीच होने वाला फाइनल मुकाबला केवल मैदान पर रोमांच ही नहीं बढ़ाएगा, बल्कि मैदान से बाहर भी इसने अर्थव्यवस्था को एक बड़ा बूस्ट दिया है। रेस्तरां, पब, मल्टीप्लेक्स, फूड डिलिवरी प्लेटफॉर्म और क्रिक कॉमर्स कंपनियां इस ऐतिहासिक

मैच से ताबड़तोड़ कारोबार की उम्मीद कर रही हैं। कारोबार में भारी इजाफे की संभावना फुटबॉल प्रेमी इस महामुकाबले को बड़े पैरों पर या घर पर ही जश्न मनाते हुए देखने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इसी उम्मीद में, विभिन्न क्षेत्रों के व्यवसाय इस बढ़ी हुई मांग का फायदा उठाने की तैयारी में जुट गए हैं। सेमी-फाइनल में अच्छी भीड़ देखने के बाद मल्टीप्लेक्स संचालक फाइनल के लिए रिकॉर्ड दर्शक संख्या की उम्मीद कर रहे हैं, वहीं रेस्तरां और बार अपने ग्राहकों की संख्या में भारी इजाफे

के लिए कमर कस चुके हैं, खासकर उन शहरों में जहां खुलने के समय में ढील दी गई है। क्रिक कॉमर्स और फूड डिलिवरी प्लेटफॉर्म भी इस देर रात के उत्साह को भुनाने के लिए ग्राहकों को भारी छूट और आकर्षक सौगत्तों दे रहे हैं। विज्ञापन दरों में उछाल और क्षेत्रीय लाभ इस बढ़े हुए उत्साह का असर विज्ञापन होने वाले खर्च में भी स्पष्ट रूप से दिख रहा है। उद्योग सूत्रों के अनुसार फाइनल के लिए विज्ञापन की दरें दूनोमेंट के शुरुआती मैचों के दौरान 10-सेकंड के स्पाट के

लिए 2.5 लाख रुपये से बढ़कर दस गुना 25 लाख रुपये तक पहुंच गई हैं। झ

हालांकि, ये दरें अभी भी क्रिकेट विश्व कप के शुरुआती मैचों से कम हैं। नेशनल रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) को उम्मीद है कि फीफा विश्व कप फाइनल रेस्तरां को बेहतरीन कारोबार का मौका देगा। हैदराबाद और बंगलुरु को सर्वाधिक फायदा होने की संभावना है, क्योंकि इन राज्यों में रेस्तरां और पब के खुलने का समय बढ़ा दिया गया है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल फ्लेक्सिकैप फंड ने 5 साल में दोगुना किया निवेशकों का पैसा

एकमुश्त निवेश और एसआईपी दोनों में बंपर मुनाफा; जानें क्या है इस स्कीम की खास रणनीति



नई दिल्ली।

जो निवेशक बिना अधिक जोखिम उठाए अपने पैसों को तेजी से बढ़ाना चाहते हैं, उनके लिए आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल फ्लेक्सिकैप फंड एक आकर्षक विकल्प बनकर उभरा है। एक विश्लेषण के अनुसार, इस स्कीम

ने पिछले 5 साल के दौरान (जुलाई 2021 से जून 2026 तक) 14 फीसदी तक का सालाना चक्रवृद्धि रिटर्न दिया है, जिससे निवेशकों का पैसा लगभग दोगुना हो जाता है। यह फंड लम्पसम और सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) दोनों तरीकों से शानदार रिटर्न देने में सक्षम रहा है।यह स्कीम लार्ज-कैप, मिड-कैप और स्मॉल-कैप शेयरों में एकसाथ निवेश करती है, जिससे जोखिम को संतुलित रखते हुए बेहतर रिटर्न हासिल किया जा सके। आंकड़ों के मुताबिक यदि

17 जुलाई, 2021 को इस स्कीम में 10 लाख रुपये का एकमुश्त निवेश किया गया होता, तो 30 जून, 2026 तक उसकी कीमत बढ़कर करीब 19.61 लाख रुपये हो जाती, जो 14.55 फीसदी का चक्रवृद्धि रिटर्न दर्शाती है। यह स्कीम के बेंचमार्क के 11.88 फीसदी रिटर्न से कहीं बेहतर है। एसआईपी निवेशकों के लिए भी यह फंड काफी फायदेमंद साबित हुआ है। स्कीम शुरू होने के बाद से यदि हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी 30 जून, 2026 तक की गई होती, तो कुल 6

लाख रुपये के निवेश पर 8.47 लाख रुपये मिलते। यह 13.83 फीसदी के मजबूत सीएजीआर को दर्शाता है, जबकि इसके बेंचमार्क ने 10.43 फीसदी का रिटर्न दिया। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एएएमसी के एक अधिकारी के अनुसार, स्कीम का उद्देश्य ऐसे पोर्टफोलियो बनाना है जो बाजार में गिरावट के दौरान भी तेजी से रिकवर कर सकें। यह ग्रोथ से वैल्यू बनती है के सिद्धांत पर काम करती है, जिसका फोकस लंबी अवधि की वृद्धि क्षमता वाले व्यवसायों में निवेश पर रहता है।

रिकॉर्ड ऊंचाई पर शक्कर, थोक भाव 5000 के पार

भोपाल।



मीठे का कारोबार अब कड़वा होता जा रहा है, क्योंकि शक्कर के थोक दाम पहली बार 4800-4900 रुपए प्रति क्विंटल पार कर 5000 रुपए तक पहुंचने की आशंका है। खुदरा में यह 5100-5200 रुपए प्रति क्विंटल तक पहुंच गई है। यह तेजी मानसून की अनिश्चितता और बढ़ती मांग का सीधा परिणाम है। बीते एक पखवाड़े में शक्कर 300 से 500 रुपए प्रति क्विंटल महंगी हुई है। भोपाल शक्कर व्यापारी एसोसिएशन के अनुसार पर्याप्त मांग और मानसून की बेरुखी ने कारोबार को तेज किया है। मजबूत मांग और कमजोर आपूर्ति भी बाजार को सपोर्ट कर रही है। ब्रोकरों तथा व्यापारियों का कहना है कि अलनीनो प्रभाव और बाजौल, थाईलैंड जैसे प्रमुख उत्पादक देशों में भी दाम बढ़ने से इसका असर भारतीय बाजारों पर स्पष्ट दिख रहा है।

बारिश के दिनों में बाइक या स्कूटर को बेहतर स्थिति में रखने वरते सावधानी



नई दिल्ली।

दो पहिया वाहनों में बरसात के मौसम में सड़कों पर जलभराव और अधिक नमी ब्रेक की क्षमता कम करने, चैन में जंग लगने, बैटरी की समस्या और इंजन में खराबी जैसी दिक्कतें आ सकती है। पूरे मानसून के दौरान अपनी बाइक या स्कूटर को बेहतर स्थिति में रखने के लिए कुछ जरूरी सावधानियां अपनाना बेहद आवश्यक है। सबसे पहले, टायरों की स्थिति की नियमित जांच करें, घिसे हुए टायरों को तुरंत बदल देना चाहिए और टायरों में निर्धारित मात्रा में हवा बनाए रखना सुरक्षित सफर के लिए जरूरी है, क्योंकि बरसात में सड़कें अधिक फिसलन भरी होती हैं। ब्रेक की कार्यक्षमता पर भी विशेष ध्यान दें, यदि ब्रेक लगाने पर किसी प्रकार की आवाज सुनाई दे या ब्रेक सामान्य से कमजोर महसूस हों तो तुरंत उनकी जांच करानी चाहिए। बाइक की चेन को जंग से बचाने के लिए उसकी नियमित सफाई और

चिकनाई करना लाभदायक रहता है। अपने वाहन को लंबे समय तक बारिश में खुले स्थान पर न छोड़ें, और यदि संभव न हो तो अच्छे गुणवत्ता वाले जलरोधी आवरण का उपयोग करें। नमी और धूल के कारण वायु शोधक जल्दी गंदा हो सकता है, इसलिए नियमित अंतराल पर इसकी सफाई कराएं। बैटरी के जोड़ और विद्युत प्रणाली की जांच करते रहें, और जलभराव वाली सड़कों पर बाइक या स्कूटर चलाने से बचें, क्योंकि अधिक पानी में इंजन में पानी जाने का खतरा रहता है। यदि वाहन पानी में बंद हो जाए तो बार-बार चालू करने का प्रयास न करें। बारिश के बाद कीचड़ और गंदे पानी को स्ट्राने के लिए वाहन को साफ पानी से धोकर अच्छी तरह सुखाएं। सफर के दौरान वर्षा से बचाव का वस्त्र, एंटी-फॉग हेल्मेट शीशा और पंचर सुधारने का सामान हमेशा साथ रखें। सुरक्षित ड्राइविंग के लिए नियंत्रित गति बनाए रखें, आगे चल रहे वाहन से पर्याप्त दूरी बनाएं और अचानक ब्रेक लगाने से बचें।

इलेक्ट्रिक स्कूटर विडा वीएक्स2 प्लस का नया संस्करण पेश



नई दिल्ली।

भारतीय बाजार में हीरो विडा ने अपने इलेक्ट्रिक स्कूटर विडा वीएक्स2 प्लस का एक नया संस्करण पेश किया है। इलेक्ट्रिक स्कूटर का यह नया मॉडल, पहले से उपलब्ध 3.4 किलोवाट-घंटा संस्करण की तुलना में काफी अधिक ड्राइविंग रेंज प्रदान करता है। नए विडा वीएक्स2 प्लस की एक्स-शोरूम कीमत नई दिल्ली में 1.44 लाख रुपये निर्धारित की गई है, जो इसे लंबी दूरी तय करने वाले ग्राहकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाती है। इस नए संस्करण में दो हटाई जा सकने वाली 2.2 किलोवाट-घंटा बैटरियां दी गई हैं, जिनकी कुल क्षमता 4.4 किलोवाट-घंटा है। कंपनी का दावा है कि यह ईवी स्कूटर एक बार पूर्ण चार्ज होने पर 187 किलोमीटर की आईडीसी

प्रमाणित रेंज प्रदान कर सकता है, जो इसके मौजूदा छोटे बैटरी पैक वाले मॉडल की 146 किलोमीटर की रेंज से काफी बेहतर है। चार्जिंग के लिए, इसके साथ 1 किलोवाट क्षमता वाला पोर्टेबल चार्जर मिलता है, जिससे बैटरी को शून्य से 80 प्रतिशत तक चार्ज होने में लगभग 3 घंटे 17 मिनट और पूर्ण चार्ज होने में करीब 5 घंटे 8 मिनट का समय लगता है। डीसी फास्ट चार्जिंग की सुविधा का उपयोग करने पर, बैटरी केवल 65 मिनट में 80 प्रतिशत तक चार्ज हो जाती है, और हीरो के 6,000 से अधिक फास्ट चार्जिंग स्टेशन देशभर में उपलब्ध हैं।

वीएक्स2 प्लस में पहले की तरह 6 किलोवाट की मोटर दी गई है, जो 26 न्यूटन मीटर का टॉर्क उत्पन्न करती है और इसकी अधिकतम गति 90 किलोमीटर प्रति घंटा है। इसमें ईको, राइड और स्पोर्ट जैसे तीन राइडिंग मोड के साथ-साथ ओवरटेकिंग के लिए बूस्ट सुविधा भी मिलती है। स्कूटर में 4.3 इंच की टीएफटी स्क्रीन, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और मोड़-दर-मोड़ दिशा-निर्देशन जैसी आधुनिक सुविधाएं भी शामिल हैं।

एआई से डरे नहीं युवा, भारतीय आईटी को मिलेंगे नए अवसर- आनंद महिंद्रा

भारत को उपभोक्ता नहीं, बल्कि एआई का निर्माता बनना होगा

नई दिल्ली।

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनी टेक महिंद्रा के चेयरमैन आनंद महिंद्रा ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को लेकर भारतीय आईटी सेवा उद्योग में व्याप्त आशंकाओं को निराधार बताया। उन्होंने कहा कि एआई इस क्षेत्र की भूमिका को खत्म नहीं करेगा, बल्कि समय के साथ इसे और महत्वपूर्ण बनाएगा। युवाओं को एआई से घबराने के बजाय तालमेल बैठाने की सलाह दी गई है। टेक महिंद्रा की वार्षिक आम बैठक (एजीएम) में आनंद महिंद्रा ने स्पष्ट किया कि आने वाले समय में एआई रोजगार के कई नए अवसर पैदा करेगा और मौजूदा नौकरियों को बेहतर बनाएगा। उन्होंने जोर दिया कि भारत केवल बाहर विकसित प्रौद्योगिकी का उपभोक्ता नहीं, बल्कि एआई के क्षेत्र में निर्माता और आकार देने वाला भी बनना होगा। परम सुपरकंप्यूटर का उदाहरण देते हुए उन्होंने स्वदेशी नवाचार और संप्रभु एआई के विकास में घरेलू क्षमता व आविर्भरता पर बल दिया।

बच्चों को बार-बार पेट दर्द हो तो हो जाएं सतर्क, ये हो सकता है इस गंभीर बीमारी का संकेत



अगर आपका बच्चा बार-बार पेट दर्द की शिकायत करता है तो इसे सिर्फ गैस या अपच समझकर नजरअंदाज न करें। यह एपेंडिक्स की बीमारी यानी एपेंडिसाइटिस भी हो सकती है। जी हां, यह बीमारी सिर्फ बड़ों को ही नहीं, बल्कि बच्चों को भी हो सकती है और अगर समय पर ध्यान न दिया जाए तो ये जानलेवा भी बन सकती है। इसलिए जरूरी है कि आप इस बीमारी के लक्षणों को समय रहते पहचानें ताकि सही समय पर डॉक्टर की मदद ली जा सके और बच्चा सुरक्षित रहे।

क्या होता है एपेंडिक्स और कैसे होती है ये बीमारी? एपेंडिक्स एक छोटी थैली जैसी अंग होती है जो हमारे पेट में बड़ी आंत से जुड़ी होती है। जब इसमें सूजन आ जाती है तो उसे एपेंडिसाइटिस कहा जाता है। सूजन के पीछे कारण हो सकते हैं जैसे –

आंत में मल का जमा हो जाना
किसी तरह का संक्रमण
या फिर कोई रुकावट
जब एपेंडिक्स में सूजन आ जाती है, तो उसमें तेज दर्द होता है और दूसरी परेशानियां भी शुरू हो जाती हैं।

बच्चों में एपेंडिसाइटिस कितनी आम है? एपेंडिसाइटिस किसी भी उम्र के व्यक्ति को हो सकती है लेकिन 5 साल से बड़े बच्चों में यह बीमारी ज्यादा देखी जाती है। हालांकि, 1 से 3 साल के छोटे बच्चों यानी टॉडलर्स में भी यह बीमारी हो सकती है। छोटे बच्चों की सबसे बड़ी परेशानी यह होती है कि वे अपने दर्द और लक्षण ठीक से बता नहीं पाते जिससे बीमारी की पहचान में देर हो जाती है।

बच्चों में एपेंडिसाइटिस के लक्षण
बच्चों में एपेंडिसाइटिस के कुछ खास लक्षण इस प्रकार हैं :
पेट के निचले दाएं हिस्से में बार-बार या लगातार दर्द
हल्का या तेज बुखार
उल्टी या मतली आना
भूख कम हो जाना या खाना खाने से मना करना
पेट फूला हुआ लगना
बच्चा बहुत चिड़चिड़ा हो जाना
बिना वजह थकान महसूस करना
इन लक्षणों में से अगर एक या एक से ज्यादा दिखाई दें, तो तुरंत डॉक्टर से मिलें।

क्यों है समय पर इलाज जरूरी? अगर समय रहते इलाज नहीं किया गया, तो एपेंडिक्स फट सकता है, जिससे पेट के अंदर गंभीर संक्रमण (पैरीटोनाइटिस) हो सकता है। यह स्थिति जानलेवा बन सकती है। खासकर 5 साल से छोटे बच्चों में यह खतरा बहुत अधिक होता है क्योंकि लक्षण जल्दी बढ़ते हैं।

डॉक्टर कैसे करते हैं जांच? एपेंडिसाइटिस का पता लगाने के लिए डॉक्टर निम्नलिखित जांच करते हैं शारीरिक जांच, खून की जांच (इंफेक्शन देखने के लिए), अल्ट्रासाउंड। कुछ मामलों में सीटी स्कैन, हालांकि छोटे बच्चों में इसका इस्तेमाल कम किया जाता है, क्योंकि इससे रेडिएशन का खतरा होता है। सबसे जरूरी है कि किसी अनुभवी पीडियाट्रिक सर्जन द्वारा बच्चे की जांच की जाए।



बच्चे को बनाना है तेज और समझदार तो पैरेंट्स आज से अपनाएं ये 5 आदतें

हर माता-पिता का सपना होता है कि उनका बच्चा पढ़ाई में अच्छा करे, आत्मविश्वासी हो, समझदार बने और जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना पूरे फोकस और समझदारी से करे। बच्चों का दिमाग जितना तेज और समझदार होता है, वे उतनी जल्दी चीजें समझ पाते हैं, सही फैसले ले पाते हैं और खुद को अच्छे से दूसरों के सामने रख पाते हैं। बच्चों के ब्रेन डेवलपमेंट को बेहतर बनाने के लिए 5 जरूरी आदतों के बारे में बताया है, जिन्हें हर पैरेंट को अपने बच्चे की परवरिश में शामिल करना चाहिए। आइए इन बातों पर एक-एक करके नजर डालते हैं।

घर का माहौल रखें पॉजिटिव और शांत बच्चे जिस माहौल में पलते हैं, उनका दिमाग उसी के अनुसार बनता और बढ़ता है। अगर घर का माहौल शांति और प्यार से भरा होगा तो बच्चा भी मानसिक रूप से मजबूत और खुशहाल बनेगा। मम्मी-पापा और बच्चों के बीच एक गहरा जुड़ाव (बॉन्ड) होना बहुत जरूरी है। इसके लिए जरूरी है कि पूरा परिवार रोज थोड़ा समय एक-दूसरे के साथ बिताए। चाहे वो साथ में खाना खाना हो, कोई

मस्ती भरा गेम खेलना हो, एक साथ गाना गाना या डांस करना हो, पिलो फाइट या पकड़म पकड़ाई जैसा कोई खेल हो। ये सभी छोटी-छोटी चीजें बच्चों के मानसिक विकास में बड़ा रोल निभाती हैं।

बच्चों को दें फ्री प्ले टाइम दूसरी सबसे जरूरी चीज है बच्चों को खुलकर खेलने का समय देना। हर बच्चे को रोज शाम को कम से कम 1 घंटा बाहर खुले मैदान में खेलने का मौका जरूर मिलना चाहिए। बच्चा अगर दौड़ता है, कूदता है, चढ़ता है या फिजिकल एक्टिविटीज करता है तो इससे उसका नर्वस सिस्टम मजबूत होता है जो दिमाग के विकास में बहुत मदद करता है। इसके अलावा, यह खेलने का समय बच्चे की क्वांटिटी सोच, आत्मविश्वास और सोशल स्किल्स को भी बढ़ाता है।

बच्चों का न्यूट्रिशन रखें बैलेंस्ड बच्चों के खाने-पीने का खास ध्यान रखा जाए। घर का बना ताजा खाना ही सबसे अच्छा होता है। बच्चों को प्रोसेस्ड, पैकेज्ड या बाहर का



फास्ट फूड बिल्कुल न दें। फल, सब्जियां, दाल, रोटी, दूध, नट्स और देसी खाना बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए जरूरी होता है। सही पोषण ना सिर्फ शरीर को ताकत देता है, बल्कि दिमाग को भी एक्टिव और फोकस्ड बनाए रखता है।

रूटीन ना करें गड़बड़ एक और बहुत जरूरी बात जो अक्सर पैरेंट्स नजरअंदाज कर देते हैं – बच्चे का स्लीप रूटीन। अगर बच्चा कभी 12 बजे, कभी 1 बजे और कभी 2 बजे सोता है, तो ये बदलाव उसके दिमाग के लिए झटके की तरह होते हैं। बच्चे का हर दिन एक तय समय पर सोना और एक तय समय पर उठना बहुत जरूरी है। सही रूटीन से बच्चे को नींद भरपूर मिलती है और

उसका दिमाग फ्रेश और एक्टिव रहता है। रूटीन गड़बड़ होने से बच्चा चिड़चिड़ा, थका हुआ और कम ध्यान देने वाला बन सकता है। इसलिए पैरेंट्स को चाहिए कि सोने और खाने का रूटीन बच्चे के लिए पहले दिन से ही तय करें और उसे लगातार फॉलो कराएं।

पैरेंट्स खुद इन बातों को लें सीरियसली अगर आप ऊपर बताई गई 5 आदतों को नजरअंदाज करते हैं, तो उसका सीधा असर आपके बच्चे के व्यवहार पर पड़ सकता है। ऐसा बच्चा बार-बार चिड़चिड़ा हो सकता है, जरूरत से ज्यादा जिद या टैंटम दिखा सकता है, पढ़ाई या एक्टिविटीज में फोकस नहीं कर पाएगा। इसलिए जरूरी है कि माता-पिता इन बातों को हल्के में न लें और बच्चों के ब्रेन डेवलपमेंट के लिए इन सभी बातों को अपनी डेली रूटीन का हिस्सा बनाएं।

बच्चों का दिमाग एक स्पंज की तरह होता है जितना अच्छा आप उसमें भरेंगे, उतना अच्छा वो आगे जाकर करेगा। अगर आप ये 5 आसान बातें अपने रोजमर्रा में शामिल कर लें, तो आपका बच्चा न सिर्फ पढ़ाई में, बल्कि पूरी जिंदगी में शानदार प्रदर्शन करेगा।

बरसाती मौसम में हो गया है आई फ्लू तो ये गलती ना कर बैठें, खासकर बच्चे के साथ...



बरसाती मौसम (मानसून) में आंखों में संक्रमण, लालगी और सूजन की समस्या आम हो जाती है। इस मौसम में बैक्टीरिया, वायरस और फंगल इंफेक्शन तेजी से फैलते हैं, जिससे कंजक्टिवाइटिस (आंख आना), जिसे आम भाषा में आई फ्लू या पिक पलू भी कहा जाता है। स्टाई (आंख पर फुंसी), एलर्जी और ड्राई आई सिंड्रोम जैसी समस्याएं हो सकती हैं। चलिए आपको आंखों को संक्रमण, लालगी और सूजन से बचाने के कुछ कारगर उपाय बताते हैं।

बरसात में आंखों को इंफेक्शन, लालगी और सूजन से बचाने के उपाय

आंखों को बार-बार छूने से बचें: गंदे हाथों से आंखों को छूने या मलने से बैक्टीरिया और वायरस आंखों में चले जाते हैं। आंखों को छूने से पहले हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोएं।

गंदे पानी और बारिश के पानी से आंखों को



बचाएं: बारिश में भीगने से बचें, खासकर जब पानी आंखों में जाने की संभावना हो। सड़क का गंदा पानी आंखों में न जाने दें।

साफ तौलिया और रुमाल का इस्तेमाल करें: आंख पोंछने के लिए हमेशा साफ और अलग रुमाल/तौलिया इस्तेमाल करें। परिवार में किसी को आंख का इंफेक्शन है तो उनके तौलिया, चश्मा न साझा करें।

आंखों में पानी से धोते रहें: दिन में 2-3 बार ठंडे पानी से आंखें धोएं, इससे धूल-मिट्टी और बैक्टीरिया निकल जाते हैं। गुलाब जल में कॉटन भिगोकर आंखों पर रखना भी राहत देगा।

आंखों में मेकअप प्रोडक्ट्स का सीमित इस्तेमाल करें: बरसात में आई-लाइनर, काजल आदि का ज्यादा प्रयोग न करें क्योंकि पसीना और नमी से इंफेक्शन का खतरा बढ़ता है। यदि इस्तेमाल करें तो ब्रांडेड

और हाइजीनिक प्रोडक्ट ही लें।

आंखों को बार-बार रगड़ें नहीं: यदि आंखों में जलन, खुजली या पानी आ रहा हो तो डॉक्टर से परामर्श लें। रगड़ने से स्थिति और बिगड़ सकती है।

आंखों को आराम दें: मोबाइल, लैपटॉप पर ज्यादा समय न बिताएं। हर 20 मिनट में 20 सेकंड के लिए आंखें बंद करके आराम दें।

आंखों के चश्मे और कॉन्टैक्ट लेंस की सफाई पर ध्यान दें: चश्मे को दिन में 2-3 बार साफ करें। कॉन्टैक्ट लेंस को सही तरह स्ट्रलाइज करके ही पहनें और गंदे हाथों से न छुएं।

डॉक्टरों से सलाह कब लें?

आंखों में लगातार पानी आना, जलन या सूजन बढ़ना।

पीला या हरा मवाद निकलना।

नजर धुंधली हो जाना।

तेज सिरदर्द या बुखार के साथ आंखों में परेशानी होना।

घरेलू उपाय जो मदद करेंगे (सावधानी के साथ करें)

गुलाब जल और ठंडी पट्टियां से आंखों पर सेक करें।

त्रिफला जल से आंखों को धोना भी लाभकारी है (डॉक्टर से परामर्श के बाद)।

एलोवेरा जेल का इस्तेमाल आंखों के आस-पास हल्के से कर सकते हैं (आंखों के अंदर न जाए)।

ये लोग विशेष सावधानी बरतें

आंखों से जुड़ा कोई भी आई ड्रॉप बिना डॉक्टरों से सलाह के ना डालें। खासकर बच्चों की आंखों में ऐसी कोई दवा इस्तेमाल ना करें जो डॉक्टरों से सलाह के अनुसार ना हो।

बच्चों और बुजुर्गों की आंखों की देखभाल पर विशेष ध्यान दें।

मानसून में आंखों का इंफेक्शन जल्दी फैलता है, इसलिए यदि किसी को कंजक्टिवाइटिस है तो उनसे दूरी बनाए रखें।

बच्चों में डायरिया को न करें नजरअंदाज, समय पर करें ये जरूरी इलाज



डायरिया, यानी दस्त की परेशानी, बच्चों में बहुत आम होती है खासकर गर्मी और बरसात के मौसम में। जब किसी बच्चे को बार-बार ढीला, पानी जैसा मल होने लगे तो यह डायरिया होता है। यह तब खतरनाक बन जाता है जब शरीर में पानी और जरूरी मिनरल्स की कमी होने लगे जिसे डिहाइड्रेशन कहा जाता है। बच्चों का शरीर छोटा होता है इसलिए पानी की कमी बहुत

जल्दी हो सकती है। यही कारण है कि डायरिया को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। यह किसी अन्य बीमारी या संक्रमण का संकेत भी हो सकता है।

कब चिंता की बात होती है?

कभी-कभी हल्का डायरिया सामान्य होता है, जैसे कि जब बच्चा नई चीजें खाता है या मौसम बदलता है। लेकिन अगर बच्चा दिन में 3-4 बार से ज्यादा पतले दस्त कर रहा है,

तो यह चिंता का कारण बन सकता है।

डायरिया के सामान्य कारण :
गंदा खाना या पानी
हाथ साफ न होना
बोतल या बर्तन साफ न होना
संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आना
खुले में शौच जाना
गंदे खिलौने या चीजें मुंह में डालना
दूध न पच पाना भी हो सकता है कारण कई छोटे बच्चों को लैक्टोज इन्टॉलरेंस होता है यानी वे दूध ठीक से नहीं पचा पाते। इससे भी डायरिया हो सकता है। इसके अलावा, कभी-कभी नई चीज खाने पर या ज्यादा एंटीबायोटिक दवाएं लेने पर भी दस्त हो सकते हैं। बच्चों की इम्युनिटी कमजोर होती है, इसलिए वे जल्दी बीमार पड़ सकते हैं।

डायरिया होने पर सबसे जरूरी है – पानी और नमक की पूर्ति

जब बच्चा डायरिया से पीड़ित होता है तो उसके शरीर से बहुत सारा पानी, नमक और जरूरी तत्व (इलेक्ट्रोलाइट्स) बाहर निकल जाते हैं। इस स्थिति में सबसे जरूरी है कि

बच्चे को ओआरएस (हक्क) का घोल पिलाया जाए। हर बार दस्त के बाद हक्क देना चाहिए, ताकि शरीर में पानी और नमक की कमी न हो। छोटे बच्चों को माँ का दूध जरूर देते रहें, क्योंकि यह पोषण भी देता है और डिहाइड्रेशन से भी बचाता है।

क्या खाना दें?

बच्चे को हल्का और आसानी से पचने वाला खाना देना चाहिए, जैसे :
खिचड़ी
दाल-चावल
केला
सेब की चटनी
दही
भारी, तली-भुनी चीजें या दूध जैसी चीजों से परहेज करें।

अगर बच्चा खाना नहीं चाहता तब भी उसे थोड़ा-थोड़ा खाते रहने को कहें। साथ में खूब सारा साफ पानी, नारियल पानी या नीबू पानी पिलाएं।

साफ-सफाई है सबसे जरूरी डायरिया से बचाव के लिए साफ-सफाई का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। बच्चों को खाने से पहले और टॉयलेट के

बाद हाथ धोने की आदत डालें
बोतल, बर्तन और खिलौने रोज साफ करें

साफ और उबला हुआ पानी पिलाएं
बाहर का खाना देने से बचें
खुले में खेलने के बाद भी हाथ जरूर धुलवाएं। साफ-सफाई और सतर्कता से डायरिया से बचा जा सकता है।

नवजात और छोटे बच्चों में डायरिया – ज्यादा खतरा

अगर बच्चा 6 महीने से छोटा है, और उसे दस्त हो जाएं, तो तुरंत डॉक्टर को दिखाएं। इतने छोटे बच्चों में डिहाइड्रेशन बहुत जल्दी हो सकता है और उनका शरीर इसे सह नहीं पाता। समय पर इलाज न मिलने से कमजोरी, वजन कम होना, कुपोषण जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए अगर बच्चे को 24 घंटे से ज्यादा दस्त हों, तो देरी न करें।

कब डॉक्टर से तुरंत मिलना चाहिए?

अगर बच्चा बहुत सुस्त हो जाए, आंखें धंसी हुई लगें, पेशाब कम आए, बार-बार उल्टी हो, खून के साथ दस्त हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। डिहाइड्रेशन बढ़ने पर बच्चे को अस्पताल में भर्ती भी करना पड़ सकता है। डायरिया को नजरअंदाज करना खतरनाक हो सकता है, खासकर छोटे बच्चों में। सही समय पर ओआरएस देना, हल्का खाना, साफ पानी और साफ-सफाई से न केवल इलाज किया जा सकता है, बल्कि इसे रोका भी जा सकता है। सावधानी और सही देखभाल से आपका बच्चा जल्दी ठीक हो सकता है।



रोहित नंबर 1, गिल-मिचेल मार्श 5वें स्थान पर

● वनडे में साल 2023 से सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले टॉप-5 बल्लेबाज

नई दिल्ली। रोहित शर्मा ने साल 2023 ले लेकर अब तक कुल 51 पारियां वनडे क्रिकेट में खेले हैं जिसमें उन्होंने 2303 रन बनाए हैं और इसमें उनके बल्ले से 246 छक्के और 108 छक्के निकले हैं। 51 पारियों में 108 छक्के लगाकर वो साल 2023 से अब तक सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले दुनिया के टॉप-5 बल्लेबाजों की लिस्ट में पहले नंबर पर हैं। इन 51 पारियों में रोहित ने 4 शतक और 16 अर्धशतक भी लगाए हैं।

साल 2023 से लेकर अब तक सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में दूसरे नंबर पर मुहम्मद वसीम हैं जिन्होंने 46 पारियों में कुल 68 छक्के लगाए हैं जबकि तीसरे नंबर पर मौजूद डेरिल मिचेल ने भी 46 पारियों में कुल 65 सिक्स जड़े हैं।

चयनकर्ताओं पर भड़का दिग्गज, कोहली को भी दे डाली चेतावनी

नई दिल्ली। रोहित शर्मा को वनडे वर्ल्ड कप 2027 के प्लान में नहीं शामिल करने वाली रिपोर्ट पर भारतीय दिग्गज रविचंद्रन अश्विन का गुस्सा फूटा है। उन्होंने साफतौर पर कहा है कि रोहित और विराट जैसे खिलाड़ियों को सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने साथ ही यह भी कहा कि अगर आप रोहित को वर्ल्ड कप के प्लान में नहीं देख रहे थे तो फैसला पहले लेना चाहिए था। अब 12-15 महीने जब वर्ल्ड कप में बचे हैं तो यह फैसला सही नहीं है। साथ ही अश्विन ने विराट कोहली को भी चेतावनी दी है।

रोहित शर्मा के आखिरी इंटरनेशनल मैच की अटकलें लगने लगी हैं। इंडियन एक्सप्रेस की एक्सक्लूसिव रिपोर्ट के बाद खेल जगत में हलचल मच गई है। ज्यादातर लोग इस फैसले की रिपोर्ट से हैरान हैं। सभी ने रोहित शर्मा के समर्थन में कहा है कि वह फिट हैं और उनका फॉर्म भी खराब नहीं है। आंकड़े भी रोहित के पक्ष में ही हैं। वर्ल्ड

‘रोहित-विराट को सम्मान मिलना चाहिए’

कप 2023 के बाद से वह सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय खिलाड़ी भी हैं। इन्हीं सब बातों को देखते हुए यह खबर किसी को पच नहीं रही है।



विराट कोहली को क्यों अश्विन ने चेताया ?

पूर्व स्पिनर ने आगे विराट कोहली पर भी बात की और कहा, ‘रोहित और विराट जैसे खिलाड़ियों को सम्मान मिलना चाहिए। विराट कोहली बेहतरीन फॉर्म में हैं। रोहित भी ठीकठाक खेल रहे थे। फिर हमने ऐसा करने के लिए अगस्त 2026 तक आने का इंतजार क्यों किया, जब विश्व कप में सिर्फ 10-12-15 महीने बाकी हैं। आपने इस मामले को यहां तक क्यों खींचा, यह मेरा सवाल है? जिस तरह से यह चल रहा है विराट को भी अपने टॉप फॉर्म में रहना होगा। वरना पता नहीं क्या हो जाएगा। रोहित भी खराब फॉर्म में नहीं हैं। ‘

रविचंद्रन अश्विन ने क्या कहा?

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने भी इस पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने सबसे पहले कहा, ‘यशस्वी जायसवाल को आपको मौका देना है, ठीक है, मगर बतौर कोच, सेलेक्टर और कप्तान यह फैसला किसका होगा? अगर आपने पहले ही अपने दिमाग में बिठा लिया है कि यह खिलाड़ी आप 2027 वर्ल्ड कप में नहीं ले जाएंगे और आपको उनकी जरूरत नहीं है, तो इसको चैंपियंस ट्रॉफी के बाद ही उन्हें बताना चाहिए था। मुझे पता है कि यह दो धारी तलवार की तरह है।’ अश्विन ने आगे कहा, ‘वहीं अगर आप खिलाड़ियों से जानकर यह कहेंगे कि आप अब उनसे आगे बढ़कर देखा चाहते हैं तो यह किसी भी खिलाड़ी को अच्छा नहीं लगेगा। अगर मेरे साथ भी ऑस्ट्रेलिया में कोच या चयनकर्ताओं ने ऐसा किया होता तो मुझे भी बुरा लगता।

चैंपियन टीम को पहली बार मिलेगी इतनी मोटी रकम

8395 करोड़ की इनामी राशि

नई दिल्ली (एजेंसी)। फीफा वर्ल्ड कप 2026 में कई ऐसे रिकॉर्ड बने जो पहली बार देखने को मिले। वहीं पहली बार टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 48 टीमें खेलीं, सबसे ज्यादा मैच हुए और सबसे लंबा फीफा वर्ल्ड कप भी यहीं रहा। इस टूर्नामेंट के लिए प्राइज मनी भी ऐतिहासिक है। फीफा वर्ल्ड कप 2026 के इतिहास की सबसे बड़ी प्राइज मनी का इस बार ऐलान किया गया है।

इस बार टूर्नामेंट के लिए कुल 871 मिलियन डॉलर (करीब 8,395.65 करोड़ भारतीय रुपये) का रिकॉर्ड पुरस्कार पूल रखा गया है। इस बार फीफा विश्व कप 2026 की प्राइज मनी कुल 871 मिलियन डॉलर की राशि में से 703

मिलियन डॉलर (करीब 6775.8 करोड़ भारतीय रुपये) प्रदर्शन के आधार पर बांटे जाएंगे। वहीं 168 मिलियन डॉलर (करीब 1619.2 करोड़ रुपये) सभी क्वालिफाई करने



2026 की प्राइज मनी

- चैंपियन टीम: 51 मिलियन डॉलर (490 करोड़ भारतीय रुपये)
- रनर अप: 33 मिलियन डॉलर (317 करोड़ भारतीय रुपये)
- तीसरे स्थान: 29 मिलियन डॉलर (279 करोड़ भारतीय रुपये)
- चौथे स्थान: 27 मिलियन डॉलर (259 करोड़ भारतीय रुपये)
- 5वें-8वें स्थान: 182 करोड़ रुपये प्रत्येक टीम
- 9वें-16वें स्थान: 144 करोड़ रुपये प्रत्येक टीम
- 17वें-32वें स्थान: 105 करोड़ रुपये प्रत्येक टीम
- 33वें-48वें स्थान: 86 करोड़ रुपये प्रत्येक टीम

वाली टीमों को भागीदारी शुल्क और तैयारी करने के अनुदान के रूप में मिलेंगे। पिछले संस्करण की बात करें तो विजेता टीम को 348 करोड़ भारतीय रुपये (42 मिलियन डॉलर) मिले थे। रनर अप को 248 करोड़ की राशि दी गई थी। जबकि टूर्नामेंट में शामिल 32 टीमों में कुल 3600 करोड़ रुपए से ज्यादा की इनामी राशि बांटी गई थी।

इस बार फीफा वर्ल्ड कप में क्वालिफाई करने वाली हर टीम को करीब 12.5 मिलियन डॉलर (करीब 120.4 करोड़ रुपये) की राशि मिलेगी। वहीं फीफा द्वारा यह ऐलान भी किया गया है कि इस बार विजेता टीम के सभी खिलाड़ियों को एक खास गोल्डन रिंग भी दी जाएगी।

अर्जेंटीना और स्पेन के बीच होगा फाइनल

दूसरी ओर, मौजूदा चैंपियन अर्जेंटीना ने सेमीफाइनल में इंग्लैंड को 2-1 से हराकर लगातार दूसरी बार फाइनल में जगह बना ली। इंग्लैंड ने पहले हाफ में बढ़त बनाई थी, लेकिन दूसरे हाफ में एंजी फर्नांडेज ने बराबरी का गोल दामा। इसके बाद इंग्रजी टाइम में लाउतारो मार्टिनेज ने विजयी गोल कर अर्जेंटीना को फाइनल का टिकट दिला दिया। इस हार के साथ इंग्लैंड का 1966 के बाद पहली बार विश्व कप फाइनल खेलने का सपना टूट गया। वहीं स्पेन ने फ्रांस को 2-0 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। 2010 में विश्व कप जीतने के बाद यह पहला मौका है जब स्पेन की टीम विश्व कप के फाइनल में पहुंची है।

तीसरे वनडे से पहले भारत को झटका

● मैच विनर खिलाड़ी बाहर आज राहुल-इशान दोनों को गिल सकता मौका।

नई दिल्ली। भारत और इंग्लैंड के बीच वनडे सीरीज का तीसरा मुकाबला 19 जुलाई को लॉर्ड्स में खेला जाएगा। दूसरे वनडे मैच में टीम इंडिया के ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर चोटिल हो गए थे। बल्लेबाजी के दौरान ही उनके पैर में दिक्कत थी और उपचार के तुरंत बाद अगली ही गेंद पर वह आउट भी हो गए थे। इसके बाद ना वह फील्डिंग करने उतरे और एक भी ओवर गेंदबाजी नहीं की। अब तीसरे वनडे से पहले उनके बाहर होने की



जानकारी सामने आ रही है। वाशिंगटन सुंदर को लेकर क्रिकइंफो ने रिपोर्ट दी है कि भारतीय ऑलराउंडर तीसरे वनडे से बाहर हो सकता है। सुंदर के बाहर होने पर कुलदीप यादव को टीम में एंट्री मिल सकती है। सुंदर ने पहले मैच में नाबाद अर्धशतकीय पारी खेली थी और छक्का लगाते हुए भारत को जीत तक पहुंचाया था। ऐसे में उनका बाहर होना तीसरे व निर्णायक मैच से पहले टीम इंडिया के लिए एक झटका हो सकता है।

से खेल सकते हैं। वहीं अक्षर, सुंदर और दुबे तीनों मिलकर 20 ओवर गेंदबाजी का भी कौटा पूरा कर सकते हैं। ऐसे में अब भारत के लिए समस्या यह है कि अगर सुंदर की जगह कुलदीप को मौका मिलता है तब भारत का एक बल्लेबाज कम हो जाएगा। ऐसे में उन्हें एक स्पेशलिस्ट बल्लेबाज अतिरिक्त खिलाना पड़ सकता है। ऐसा करने पर टीम में पांच स्पेशलिस्ट गेंदबाज ही रहे जाएंगे।

वाशिंगटन सुंदर के बाहर

होने से क्यों बढ़ेगी परेशानी ?

दरअसल वाशिंगटन सुंदर ने पहले वनडे में मैच विनिंग अर्धशतकीय पारी खेलते हुए इस बात की उम्मीद फैंस व टीम को दी थी कि वह निचले क्रम पर अहम मैच विनिंग पारी बल्ले

तीसरे ODI का बदलेगा समय

लॉर्ड्स में कितने बजे शुरू होगा मुकाबला ?



नई दिल्ली। भारत और इंग्लैंड के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज का अंतिम और निर्णायक मुकाबला 19 जुलाई को लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर खेला जाएगा। इस मुकाबले में फैंस के मन में अब नई उत्सुकता होगी अपने पसंदीदा स्टार रोहित शर्मा को देखने की। आपको बता दें कि भारत और इंग्लैंड के बीच काउंटिंग में खेला गया दूसरा वनडे मैच भारतीय समयानुसार शाम 5.30 बजे शुरू हुआ था। इस मुकाबले का टॉस शाम 5 बजे हुआ था। जबकि पहला वनडे मैच बर्मिंघम में दोपहर 3.30 बजे से खेला गया था। अब तीसरे वनडे मुकाबले का समय भी बदल चुका है। तीसरा वनडे मैच भी पहले वनडे के समय पर ही खेला जाएगा। अटकलें ऐसी हैं कि रोहित का यह आखिरी मैच भी हो सकता है।

कितने बजे शुरू

होगा लॉर्ड्स वनडे ?

लॉर्ड्स में खेला जाने वाला तीसरा वनडे मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 3.30 बजे से शुरू होगा। इस मैच का टॉस दोपहर 3 बजे होगा। सीरीज का यह मुकाबला निर्णायक भी होने वाला है। पहला मैच भारत ने जीता था और दूसरा मुकाबला इंग्लैंड ने जीतते हुए सीरीज को 1-1 की बराबरी पर ला दिया था। अब लॉर्ड्स में होने वाला मुकाबला सीरीज का डिसाइडर मैच होगा।

‘सिर पर तलवार लटकी हो तो कोई अच्छा प्रदर्शन नहीं करेगा’

रोहित को सपोर्ट करते हुए भारतीय खिलाड़ी सदागोपन रमेश ने सेलेक्टर्स को लताड़ा



रोहित शर्मा पर है दबाव

रमेश ने आगे कहा कि मुझे समझ नहीं आता कि टीम मैनेजमेंट को सुपरस्टार्स से क्या दिक्कत है। कोई भी रातों-रात सुपरस्टार नहीं बनता। सुपरस्टार वही बनते हैं जो लगातार 15 सालों तक अच्छा प्रदर्शन करते हैं। इसलिए उन्हें उचित सम्मान और वैसा ही बर्ताव मिलना चाहिए।

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व ओपनर सदागोपन रमेश ने रोहित शर्मा की रिटायरमेंट की खबरों के बीच भारतीय सेलेक्टर्स को जमकर लताड़ा है। रोहित शर्मा का बल्ला इंग्लैंड के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरीज के पहले दो मैचों में नहीं चला और कहा जा रहा है कि लॉर्ड्स वनडे

उनके करियर का आखिरी मैच साबित हो सकता है। रोहित शर्मा को लेकर अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए पूर्व क्रिकेटर रमेश ने कहा कि अगर हर मैच के साथ आपके सिर पर तलवार लटकी हो तो कोई भी खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएगा। क्या सेलेक्टर और कोच इस बात को मानेंगे कि उनकी भूमिका हर सीरीज जीतने पर ही टिकी हो, नहीं इसलिए उन्हें सीधे दो या तीन साल का कॉन्ट्रैक्ट दिया जाता है। इसलिए जब दिग्गजों की बात हो तो सिर्फ एक या दो मैचों के आधार पर कोई फैसला लेना गलत है।

साउथ अफ्रीका में

रोहित की होगी जरूरत

सदागोपन रमेश ने आगे कहा कि अगला वनडे वर्ल्ड कप साउथ अफ्रीका में हो रहा है जहां पिच पर उछाल (बाउंस) होगा। ऐसे में रोहित का चयन फायदेमंद ही साबित होगा क्योंकि उछाल वाली गेंदों को खेलने में वे माहिर हैं। अगर भारत रोहित के बिना वर्ल्ड कप खेलता है तो यह न सिर्फ उनके लिए बल्कि टीम इंडिया के लिए भी नुकसानदेह होगा।



रोहित को रिटायर होने के बाद मिलेंगे इतने हजार रुपये प्रति माह!

जानिए क्या है BCCI की सालाना पेंशन स्लैब

नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान व स्टार ओपनर रोहित शर्मा टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट और टेस्ट क्रिकेट से पहले ही रिटायर हो चुके हैं। वो भारत के लिए अब सिर्फ वनडे प्रारूप में ही खेलते हैं और इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स में होने वाला तीसरा वनडे उनके करियर का आखिरी मैच हो सकता है। हालांकि ये रोहित पर निर्भर करता है कि वो इस मैच के बाद रिटायर होंगे या नहीं, लेकिन अगर वो रिटायर हो जाते हैं तो उन्हें बीसीसीआई की तरफ से पेंशन के रूप में हर महीने कितने रुपये मिलेंगे ये जानते हैं।

रोहित को मिलेंगे 70 हजार रुपये प्रति माह- बीसीसीआई पूर्व भारतीय खिलाड़ियों को पेंशन देता है और उसके लिए जो स्लैब फिलहाल है उसके मुताबिक जिन पुरुष क्रिकेटर्स ने 25 से ज्यादा टेस्ट मैच खेले हैं उन्हें 70 हजार रुपये प्रति महीने दिए जाते हैं।



रोहित-कोहली के बीच हुई 38वीं बार 50 प्लस रन की साझेदारी- रोहित शर्मा ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मैच में 26 रन की पारी खेली जबकि विराट कोहली ने 65 रन बनाए। इस मुकाबले में शुभमन गिल जब 31 रन बनाकर आउट हो गए तब तीसरे नंबर पर बटिंग करनर आए कोहली और ओपन कर रहे रोहित शर्मा के बीच दूसरे विकेट के लिए लॉर्ड्स में 61 गेंदों पर 60 रन की अच्छी पार्टनरशिप हुई। इसके बाद रोहित शर्मा आउट हो गए और ये साझेदारी टूट गई।

28314 रन, 1043 विकेट

नहीं रहे महान ऑलराउंडर गैरी सोबर्स

बर्थडे से 11 दिन पहले ली अंतिम सांस

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेस्टइंडीज ही नहीं क्रिकेट जगत के महान ऑलराउंडर गैरीफ्रील्ड सोबर्स का शुक्रवार 17 जुलाई को निधन हो गया। 89 साल की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली। इसी महीने 28 जुलाई को वह 90 साल के पूरे हो जाते। मगर अब क्रिकेट इतिहास का यह अनोखा सितारा दुनिया को अलविदा कह गया। सर गैरी सोबर्स के नाम रेड बॉल क्रिकेट में 28 हजार से ज्यादा रन और 1043 विकेट दर्ज हैं। उनके बेटे डैनियल सोबर्स ने इस खबर की पुष्टि की।

गैरी सोबर्स का नाम क्रिकेट जगत के महान



ऑलराउंडर्स में गिना जाता है। उन्होंने फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 28314 रन बनाए हैं जिसमें से 8032 रन 160 पारियों में उन्होंने वेस्टइंडीज के लिए बनाए। वहीं गेंदबाजी में उनके नाम रेड बॉल क्रिकेट में 1043 विकेट दर्ज हैं और वेस्टइंडीज के लिए भी उन्होंने 159 पारियों में 235 विकेट झटकें थे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड द्वारा भी गैरी सोबर्स के निधन पर दुख जताया गया है। बीसीसीआई ने एक्स पर पोस्ट करते हुए शोक व्यक्त किया और खास मैसेज भी लिखा। बीसीसीआई ने लिखा, ‘बीसीसीआई सर गैरीफ्रील्ड सोबर्स के निधन पर शोक जताता है। वह खेल के एक रियल आइकन थे और क्रिकेट जगत के सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंडर थे। उनकी उपलब्धियां कैरेबियन क्रिकेट के लिए हमेशा यादों का हिस्सा रहेंगी। उनके परिवार, दोस्तों और सभी खेल प्रेमियों के लिए सांत्वना।’

सचिन-गांगुली

टॉप पर, रोहित-विराट नंबर सिक्स

● वनडे में सबसे ज्यादा 50+ साझेदारी करने वाले शीर्ष 6 बल्लेबाजों की जोड़ी

नई दिल्ली। इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मुकाबले में रोहित शर्मा बड़ा स्कोर तो नहीं कर पाए थे, लेकिन विराट कोहली अर्धशतकीय पारी खेलने में सफल रहे थे। इस मैच में रोहित शर्मा और विराट कोहली ने मिलकर दूसरे विकेट के लिए भारत के लिए अर्धशतकीय साझेदारी की थी और वनडे प्रारूप में दोनों के बीच ये 38वीं 50 प्लस साझेदारी थी। इस साझेदारी के बाद रोहित और कोहली वनडे में सबसे ज्यादा बार 50 प्लस रन की अर्धशतकीय साझेदारी करने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में सातवें नंबर पर आए गए।

